वृहस्पति उपाध्याय
हिन्दी प्रकाशन मंदिर
इलाहावाद

पहली वार : १९५३

मूल्य
वारह आना

मुद्रक
नारायण पाठक
सस्ता साहित्य प्रेस, अजमेर

विषय सूची

सन्त विनोबा

: १ :

सन्त विनोबा

विनोबा घुटनों तक ऊंची धोती पहिनते हैं। वे शरीर पर एक अंगोछा ओढ़ते हैं, पैरों में एक सादी सी चप्पल पहिनते हैं और आंखों पर चश्मा लगाते हैं। यही उनकी वेश भूषा है।

विनोबा के हाथ लम्बे हैं, ललाट चौड़ा है, चेहरा तेजस्वी है, कद ठिंगना है और शरीर दुबला-पतला है। वे कभी दाढ़ी रखते हैं, कभी कटवा देते हैं। यही उनकी शारीरिक विशेषता है।

वे रोज सुबह चार बजे उठते हैं। उठकर स्नान करते हैं और स्नान के बाद प्रार्थना करते हैं। वे रोज दिन में कड़ा परिश्रम करते हैं। वे बिना भूले चर्खा चलाते हैं। वे

३०८

नियमित रूप से शरीर-श्रम करते हैं। वे प्रतिदिन चिन्तन और मनन करते हैं। वे प्रतिदिन शाम को भी प्रार्थना करते हैं। यही उनका कार्यक्रम है।

वे कम से कम बोलते हैं और ज्यादा से ज्यादा काम करते हैं। वे अपने आराम का कम से कम ख्याल रखते हैं और दूसरों के आराम का ज्यादा से ज्यादा। वे अपने लिए बहुत कड़े हैं, दूसरों के लिए बहुत कोमल। वे जो कुछ मन में होता है वही बोलते हैं, जो कुछ बोलते हैं वही करते हैं। वे नियमों का कड़ाई से पालन करते हैं। यही उनका स्वभाव है।

विनोवा न तो कोई बड़े राजा हैं, न धनपति। वे न कोई बड़े पदाधिकारी हैं, न नेता। वे पैसे से दूर रहते हैं, मान सम्मान से भागते हैं। त्याग और तपस्या ही उनका धन है। सेवा और बलिदान ही उनकी पूंजी है। इसीलिए तो राजा महाराजा उनका सम्मान करते हैं। इसीलिए तो नेता उनमें श्रद्धा रखते हैं।

विनोवा की आँखों में चमक है, वाणी में पवित्रता है, हृदय में कोमलता है और आत्मा में दिव्य शक्ति है। वे ज्ञान की प्रतिमा हैं, कर्मशीलता के अवतार हैं, तपस्या की प्रतिमूर्ति हैं। वे प्राचीन काल के ऋषि हैं, माध्यमिक काल के सन्त हैं, आधुनिक काल के महात्मा हैं।

वे एक छोटे से ग्राम में रहते हैं, छोटे से मकान में रहते हैं। वे छोटी सी धोती पहिनते हैं, सादा सा भोजन करते हैं। वे अपने पास पैसा नहीं रखते। अपने पास अन्य बहुत सी चीजें नहीं रखते। क्योंकि बड़प्पन भोग में नहीं, त्याग में होता है। ठाटबाट में नहीं, सादगी में होता है। आराम में नहीं, कठोर परिश्रम में होता है। स्वहित के काम में नहीं, लोकहित के काम में होता है। इसीलिए विनोबा बड़े हैं। इसीलिए वे महान् हैं।

वे हर चीज को पैनी नजर से देखते हैं, हर बात की गहराई में जाते हैं। वे बिना सोचे समझे कोई काम नहीं करते। बिना योजना बनाये कोई काम नहीं करते। वे बिना हिसाब लगाये कोई काम नहीं करते। वे जब कोई काम प्रारंभ करते हैं तो उसमें पूरी तरह लग जाते हैं और योजना पूर्वक आगे बढ़ते हैं। वे जब कोई काम उठाते हैं तो उसे बिना पूरा किये नहीं छोड़ते।

विनोबा समय के बड़े पाबन्द हैं। वे बात के बड़े पक्के हैं। विचारों के बड़े उदार हैं। वे क्षण-क्षण नई बातें विचारते हैं, पल-पल नई प्रगति करते हैं। वे सतत विकाश शील हैं। महादेव भाई कहते थे—उनके जैसा विकाश शील आदमी मैंने नहीं देखा। ज्योंही उनको कोई नया तत्व मिलता है उसी क्षण वे उस पर अमल

करते हैं। गांधीजी कहते थे—उनके जैसा तपस्वी मैंने नहीं देखा। वे हमेशा कठोर साधना में लगे रहते हैं।

विनोबा निर्भय हैं। वे किसी भी मुसीबत से नहीं घबराते। वे किसी अन्याय के सामने नहीं झुकते। किसी अत्याचार को सहन नहीं करते। वे सबके साथ नम्रता और प्रेम का व्यवहार करते हैं। वे सबके साथ उदारता का व्यवहार करते हैं।

विनोबा जगद्गुरु शंकराचार्य के भक्त हैं। वे सन्त ज्ञानेश्वर और गांधीजी में भी बड़ी श्रद्धा रखते हैं। वे ईसा, मुहम्मद और बुद्ध का भी बड़ा आदर करते हैं। लेकिन वे किसी एक के अन्ध अनुयायी नहीं हैं। वे किसी एक सम्प्रदाय के घेरे में बन्द होकर नहीं रहते। उनके विचार उदार हैं, उनका दृष्टिकोण विशाल है। वे जितना आदर वेद और उपनिषद का करते हैं उतना ही कुरान का भी। वे जितनी श्रद्धा रामायण और गीता में रखते हैं उतनी ही बाईबिल में भी। उन्होंने सब धर्मग्रन्थों को पढ़ा है। उन्होंने सब महापुरुषों से शिक्षा ग्रहण की है। वे सबका समान आदर करते हैं, वे सबमें समान श्रद्धा रखते हैं।

वे ज्यादा बोलना पसन्द नहीं करते। वे लम्बे भाषण देना पसन्द नहीं करते। वे बड़ी-बड़ी पुस्तकें लिखना पसन्द नहीं करते। लेकिन वे बड़ी मीठी बातें

बोलते हैं। बड़ा प्रभावशाली भाषण देते हैं। वे बड़ी सारगर्भित पुस्तकें लिखते हैं।

विनोवा कोई काम आधे मन से नहीं करते। वे छोटा से छोटा काम दिल लगाकर करते हैं और बड़ा से बड़ा भी। वे प्रार्थना करते समय नाचने लगते हैं। वे चर्खा कातते हुए तन्मय हो जाते हैं। वे चिन्तन करते हुए मग्न हो जाते हैं। लेकिन हर काम में वे समय की पाबन्दी का ख्याल रखते हैं। हर काम में वे नियमितता का ख्याल रखते हैं। वे सुस्ती से दूर रहते हैं, लापरवाही को पास फटकने नहीं देते। वे भूलों को दूर से नमस्कार करते हैं।

वे न किसी से राग रखते हैं न द्वेप। वे न किसी की निन्दा करते हैं न स्तुति। वे सबके कल्याण की बात सोचते हैं और सभी के कल्याण का काम करते हैं। वे सबमें परमेश्वर का दर्शन करते हैं। वे सबको परमेश्वरमय देखते हैं।

विनोबाजी एक लम्बे अर्से तक गांधीजी के साथ रहे हैं। वे हमेशा गांधीजी के काम करते रहे हैं। वे आज तक गांधीजी के रास्ते पर चलते रहे हैं। इसीलिये तो गांधीजी कहते थे कि भक्तिभावना में आज उनकी कोई बराबरी नहीं कर सकता। ज्ञान-विज्ञान में कोई उनकी समता नहीं कर सकता। कर्मठता में कोई उनका मुकाबला नहीं कर सकता। इसीलिए वे हमारे देश के गौरव हैं। इसीलिए वे विश्व के गौरव हैं।

: २ :

ममतामयी माँ

विनोबाजी का जन्म महाराष्ट्र में ११ सितम्बर १८९५ ई० को हुआ था। उनके पूर्वज रत्नागिरि जिले के रहने वाले थे। वे रत्नागिरि से लिम्ब आये और बाद में लिम्ब से वांई आये। विनोबाजी के दादा इसी वांई ग्राम में रहते थे। कभी-कभी वे गागोदा में भी रहते थे। गागोदा उनके पूर्वजों को ईनाम में मिला था। उनके दादाजी का नाम शंभूराव भावे था। शंभूरावजी बड़े धार्मिक आदमी थे। वे अपना समय भजन पूजन में बिताते थे। वे अपना समय कोटेश्वर के मन्दिर में बिताते थे। वे उत्सवों का आयोजन और ब्राह्मण भोजन करते रहते थे।

शंभूरावजी के विचार कट्टर नहीं थे। उनका दृष्टिकोण संकुचित नहीं था। वे उस जमाने में भी अछूतों को अपने मन्दिर में बुलाते थे। वे उस जमाने में भी उन्हें प्रेम से भोजन कराते थे। वे मुसलमानों को भी अपने मन्दिर में बुलाते थे। वे इस बारे में जाति के विरोध की परवाह नहीं करते थे।

शंभूरावजी बहुत से व्रत रखते थे। वे बहुत से उपवास रखते थे। वे घंटों मूर्ति के सामने बैठे रहते थे। वे घंटों मूर्ति

से बात करते थे। मूर्ति के सामने वे कभी रोते थे, कभी हँसते थे। वे कभी गाते थे कभी चुप रहते थे। आसपास के लोग उनकी भक्ति-भावना देखकर चकित हो जाते थे। वे उनकी तन्मयता देखकर दंग रह जाते थे।

विनोबाजी की दादी बड़ी परिश्रमी थीं। वे बड़ी रोबदार और स्वाभिमानी थीं। उनका स्वभाव बड़ा विनोदी था। वे किसी के घर नहीं जाती थीं और अपना समय भजन पूजन में ही बिताती थीं।

शंभूरावजी के तीन पुत्र थे। एक का नाम था नरहर पंत। दूसरे का नाम था गोपालराव। तीसरे का नाम था गोविन्दराव। नरहरपंत सबसे बड़े थे। वे ही विनोबा के पिता थे। वे बड़े बुद्धिमान और तेजस्वी थे। उन्होंने मेट्रिक पास किया। वे आगे भी पढ़ना चाहते थे। लेकिन शंभूरावजी को अंग्रेजी शिक्षा पसन्द नहीं थी। शंभूरावजी को अंग्रेजी संस्कार पसन्द नहीं थे। अतः नरहरपन्त ने पढ़ना छोड़ दिया। उन्होंने नौकरी करली।

विनोबाजी की माताजी सांगली के गोडबोले परिवार की थीं। वे शरीर से सुन्दर और मन से पवित्र थीं। वे हृदय से कोमल थीं। उन्हें उत्सव बहुत अच्छे लगते थे। अतिथि सत्कार बहुत प्रिय लगता था। भजन पूजन में तो उनका बहुत ज्यादा मन लगता था।

विनोबाजी का बचपन गागोदा में बीता। वहां उनके काका खेती का काम करते थे। उनके कोई सन्तान नहीं थी। वे विनोबाजी को बहुत प्यार करते थे। दादा-दादी और माता-पिता भी विनोबा को बहुत प्यार करते थे। अतः उनका बचपन बड़े लाड़-प्यार और दुलार में बीता।

विनोबाजी को अपने दादा-दादी से भक्ति-भावना मिली। उनको अपने दादा-दादी से विरक्ति और उदार दृष्टिकोण मिला।

विनोबाजी की माँ बड़े साधु स्वभाव की थीं। वे गहने बहुत कम पहिनती थी। वे कपड़े भी बहुत कम पहिनती थीं। वे कहती थीं कि अच्छे गहने पहिनने से कोई भी स्त्री बड़ी नहीं होती। अच्छे कपड़े पहिनने से भी कोई स्त्री बड़ी नहीं होती। वे कहती थीं कि शृङ्गार करने से भी कोई स्त्री सुन्दर नहीं बनती। बड़ापन तो अच्छे-अच्छे काम करने से मिलता है। सुन्दरता तो अच्छे-अच्छे गुणों में है। साज शृङ्गार से आत्मा की उन्नति नहीं होती। ठाट-बाट से मन का विकास नहीं होता। वे तो आदर्श से गिराते हैं और उन्नति में बाधक होते हैं। वे तो ईश्वर से दूर हटाते हैं।

उनको मराठी सन्तों के बहुत से भजन याद थे। वे सुबह उठते ही ये भजन गाती थीं। वे स्नान करते ही

ये भजन गाती थीं। वे भोजन बनाते समय भी ये भजन गाती थीं। वे भजनों में इतनी तल्लीन हो जाती कि कभी-कभी दाल में नमक डालना भूल जाती और कभी-कभी दाल में दुबारा नमक डाल देतीं। वे भजनों में इतनी तल्लीन हो जाती कि उनको दूसरी बातों का ध्यान ही नहीं रहता। विनोबाजी को माँ से यह भक्ति भावना, यह तन्मयता और यह सादगी मिली।

माँ घर के बड़ों की सेवा करती थीं और छोटों को प्यार करती थीं। वे अतिथियों का सत्कार करती थीं। घर में एक अन्धे चाचा रहते थे। एक दिन खबर मिली कि वे मर गये। माँ को बड़ा दुःख हुआ। विनोबा को बड़ा दुःख हुआ। पिताजी को भी बड़ा दुःख हुआ। लेकिन उनका सूतक नहीं रखा गया। अतः विनोबा ने पूछा—सूतक क्यों नहीं रखा गया? माँ ने कहा—वे हमारे परिवार के नहीं थे। वे तो बाहरी आदमी थे। बेचारे बड़े दुखी थे। हमने उनको आश्रय दे रखा था। अब विनोबा को सही बात मालूम हुई। बात यह थी कि उनकी सेवा सुश्रूषा घर के आदमी की तरह होती थी। उनका मान सम्मान घर के आदमी की तरह होता था। सेवा करते समय माँ अपने पराये का भेद नहीं करती थी। सेवा करते समय वे छोटे बड़े का भेद नहीं करती थी।

विनोबा को यह अभेद भावना माँ से मिली, यह सेवा भावना माँ से मिली।

माँ विनोबा को कहानियां सुनाती थीं। लेकिन उन कहानियों में केवल मनोरंजन नहीं रहता था। उनमें केवल दिल बहलाव नहीं रहता था। उन कहानियों में केवल हँसी मजाक नहीं रहता था। उनमें भक्ति-भावना और सात्विक विचार रहते थे। उनमें ऊंचा उठने और अच्छा बनने की प्रेरणा रहती थी। विनोबा को इन कहानियों से बहुत सी सात्विक और गंभीर बातें मिली।

लेकिन विनोबा बचपन में बड़े नट-खट और खिलाड़ी थे। वे बचपन में बड़े मुंहफट थे। वे प्रायः आसपास के पहाड़ों पर घूमने जाते और वहां के दृष्य देखते थे। वे घंटों घूमा करते। वे मीलों घूमा करते।

लेकिन वे माँ को कोई तकलीफ नहीं देते थे। वे माँ को परेशान नहीं करते थे। वे माँ की आज्ञा मानते और उनको आराम देते थे। वे उन्हें नये भजन सिखाते और नये अखबार सुनाते थे। वे माँ के काम में मदद करते थे।

: ३ :

विद्यार्थी जीवन

विनोबाजी की शिक्षा गागोदा में प्रारंभ हुई। वे मराठी पढ़ना और लिखना सीखने लगे। ९ वर्ष की आयु में वे बड़ोदा आये। यहाँ वे तीसरी कक्षा में भर्ती हुए। वे छटी कक्षा तक एक ही स्कूल में पढ़ते रहे। छटी कक्षा में वे सर्व प्रथम आये। अब उनको छात्रवृति मिली। इस स्कूल में सभी अध्यापक उनसे प्रसन्न रहे। यहाँ हमेशा वे अच्छे नम्बरों से पास हुए।

छटी कक्षा पास करके वे हायस्कूल में भर्ती हुए। यहां भी वे सर्व प्रथम रहने लगे। उन्हें छात्रवृति मिलने लगी। यहीं सन् १९१४ में वे मेट्रिक की परीक्षा में सम्मिलित हुए और पास हो गये।

विनोबाजी अपनी टोली के सरदार रहा करते थे। टोली के सब लड़के उनका कहना मानते थे। वे जिस तरह पढ़ने में आगे रहते थे, उसी तरह खेलने में भी आगे रहते थे। वे अपने मित्रों की बुरी आदतें सहन नहीं करते थे। उनके एक मित्र को प्रतिदिन चाय पीने की आदत थी। वह चाय न पीता तो उसके सिर में दर्द होता और अच्छा न लगता। विनोबा ने कहा—चाय एक प्रकार का नशा है।

यह दुर्व्यसन है। यह दुर्व्यसन छोड़ देना चाहिए। लेकिन मित्र तो उसका आदी हो गया था। वह चाय न छोड़ सका। उन्होंने प्यार से कहा और क्रोध से भी। लेकिन फिर भी कोई परिणाम नहीं निकला। एक दिन वह पाखाना गया। विनोबा को एक बात सूझी। उन्होंने बाहर से पाखाने की कुण्डी लगादी। बेचारा मित्र बड़ा परेशान हुआ। मारे बदबू के तंग आगया। बोला—भाई, कृपा करो और ईश्वर के लिए कुण्डी खोलदो; विनोबा ने कहा—जब तक तुम चाय न पीने की प्रतिज्ञा न करोगे कुण्डी नहीं खुलेगी। बेचारे ने आगे चाय न पीने का वचन दिया तब कहीं मुक्ति मिली।

विनोबा के घर का वातावरण राष्ट्रीय था। उनके घर राष्ट्रीय पत्र आते थे। राष्ट्रीय विचार के व्यक्ति भी आते रहते थे। देश की आजादी की चर्चा होती रहती थी। विनोबाजी पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से इनका असर पड़ता रहता था। उनके मन में देश भक्ति के विचार आने लगे। वे देश की दुर्दशा का अन्त करने की बात सोचने लगे।

अपने मित्रों से वे देश सेवा की बातें करने लगे। मित्रों में यह भावना बढ़ने लगी। चाय छोड़ने वाले उस मित्र के मन में भी देशभक्ति की भावनाएं हिलोर लेने लगीं।

एक दिन वह घोड़े पर बैठकर अपने खेत देखने गया। उसने एक खेत में किसी अंग्रेज ऑफीसर का डेरा देखा। उसने अंग्रेज के नौकर से कहा इस डेरे को यहां से उखाड़ लो नहीं तो मैं कल इसे उखड़वा दूंगा। दूसरे दिन वह फिर आया। लेकिन डेरा उखड़ा नहीं था। उसे बड़ा गुस्सा आया। उसने स्वयं डेरा उखाड़ फेंका। अंग्रेज साहब कहीं बाहर गये थे। वापिस लौटने पर जब डेरा उखड़ा हुआ देखा तो बहुत गुस्सा हुए। अधिकारियों से शिकायत की लेकिन कुछ हुआ नहीं। विनोबा के सभी साथी ऐसे निर्भय थे। सभी ऐसे देशभक्त और साहसी थे।

बहुत छोटी उम्र में ही उन्होंने ब्रह्मचारी रहने का निश्चय कर लिया और संयमी जीवन व्यतीत करने लगे। बात यह हुई कि उन्होंने स्वामी रामदास की दास-बोध नामक पुस्तक पढ़ी। स्वामी रामदास के विचारों और संयमी जीवन का उनपर बड़ा असर पड़ा। इस पुस्तक से ब्रह्मचर्य व्रत लेने की प्रेरणा मिली। इस समय वे १२ वर्ष के होंगे। अपने एक चचेरे भाई के साथ उन्होंने ब्रह्मचारी रहने की प्रतिज्ञा की। दोनों भाई प्रतिज्ञा में बंध गये। आगे चलकर चचेरे भाई को अपनी प्रतिज्ञा तोड़नी पड़ी लेकिन विनोबा अपने निश्चय पर अटल रहे। वे निश्चय करके हमेशा पूरा करते हैं।

वे न तो अपना वचन भंग होने देते हैं और न अपनी प्रतिज्ञा टूटने देते हैं। वे उसे पूरा करने में अपनी सारी शक्ति लगा देते हैं। यही उनकी सफलता का कारण है।

इस प्रतिज्ञा के बाद वे कठोर और संयमी जीवन बिताने लगे। वे चटाई पर सोने लगे, नंगे पैर घूमने लगे। मिठाई और मिर्च मसालों से दूर रहने लगे। वे अपना जीवन अधिक-से-अधिक पवित्र व सरल बनाने का प्रयत्न करने लगे। वे अपने विचार अधिक-से-अधिक उच्च बनाने का प्रयत्न करने लगे।

विनोबाजी को अच्छी-अच्छी पुस्तकें पढ़ने का बड़ा शौक था। उन्होंने स्वामी रामदास का दासबोध कई बार पढ़ा था। मोरोपन्त की आर्याभारत कई बार पढ़ी थी। देशभक्त मेजिनी का जीवन चरित्र उन्हें बहुत अच्छा लगा था। लोकमान्य का गीता रहस्य तो छपने के बाद ही वे २–३ दिन में पढ़ गये थे। वे केसरी हमेशा पढ़ते रहते थे। ज्ञानेश्वरी और शंकराचार्य का भाष्य उन्होंने बड़ी रुचि से पढ़े थे।

विनोबा को भाषण देने का भी बड़ा शौक था। वे वाद-विवाद में बड़ी दिलचस्पी लेते थे। जब वे बोलना शुरु करते तो देर तक बोलते रहते थे। उनका भाषण धारा-प्रवाह और ओजस्वी रहता था। वाद-विवाद में वे

ऐसे मग्न हो जाते कि घर जाना और भोजन करना भूल जाते। उनके तर्क अकाट्य होते थे, भाषा मंजी हुई होती थी। और विचार क्रान्तिकारी।

विनोबाजी ने 'विद्यार्थी मण्डल' नामक एक संस्था की स्थापना की। इस संस्था का उद्देश्य था विद्यार्थियों को उन्नत और जाग्रत करना। विद्यार्थी मण्डल में प्रति सप्ताह किसी का भाषण होता था। भाषण के बाद उस विषय पर चर्चा होती थी। संस्था की ओर से उत्सव भी मनाये जाते थे। शिवाजी जयन्ती, दास नवमी, गणेशोत्सव आदि उनमें प्रमुख थे। विद्यार्थी मण्डल का एक पुस्तकालय भी था। उसमें अच्छी अच्छी १६०० पुस्तकें थीं।

सभी सदस्य इन पुस्तकों से लाभ उठाते थे। विद्यार्थी मंडल के सदस्य अधिक नहीं थे। बात यह थी कि उसमें ढीले ढाले और मूर्ख विद्यार्थियों के लिये कोई आकर्षण नहीं था। उसके सदस्य क्रान्तिकारी विचार के थे। सबमें देशोत्थान की भावना थी।

विनोबा किताबें पढ़ने के लिए प्रसिद्ध थे। पुस्तकें पढ़ते हुए वे कभी नहीं अघाते थे। पुस्तकें पढ़ने में वे कभी थकते भी नहीं थे। जो भी पुस्तक मिलती वे बिना पूरी पढ़े न छोड़ते। वे बहुत जल्दी सारी पुस्तक पढ़ लेते थे। उन्होंने विद्यार्थी मण्डल की सारी पुस्तकें पढ़ लीं।

बड़ोदा की सेन्ट्रल लायब्रेरी और कालेज लायब्रेरी की भी सब पुस्तकें पढ़ लीं। इस अध्ययन से उनके विचार अच्छे बन रहे थे। उनका ज्ञान परिपक्व हो रहा था। उनका हृदय उच्च और विशाल बन रहा था। लेकिन इसकी कीमत भी उन्हें चुकानी पड़ी। उनकी आँखें खराब होने लगीं। पर विनोबा को इसकी कहां चिन्ता थी?

: ४ :

गृह त्याग

जब विनोबाजी कालेज में पढ़ रहे थे तब विदेश में महायुद्ध चल रहा था। देश में स्वतंत्रता की लहर फैल रही थी। और युवक देश को आजाद कराने के प्रयत्न में लगे थे। जगह जगह क्रान्तिकारियों का जोर था। वे शस्त्रास्त्र जमा कर रहे थे और अपना संगठन करके खूनी क्रान्ति के लिए तैयारी कर रहे थे। पंजाब में वे यही काम कर रहे थे। इधर महाराष्ट्र और बंगाल में भी वे यही काम कर रहे थे। उत्तर प्रदेश में भी वे चारों ओर फैले हुए थे विनोबा भी युवक थे। अतः उनके मन में भी हलचल शुरू हुई। वे भी देश की दुर्दशा पर दुःखी हुए। वे भी देश को आजाद कराने के लिए बेचैन हो गये।

गणित विनोबा का प्रिय विषय था। वे गणित में बड़ी दिलचस्पी लेते थे। वे किसी भी प्रश्न को हल किये बिना नहीं छोड़ते थे। उन्हें गणित में प्रायः पूरे नम्बर मिलते थे। लेकिन उनका गणित प्रेम केवल किताबों तक ही नहीं रहा। उनका गणित प्रेम केवल कालेज तक ही नहीं रहा। वे अपने जीवन का भी हिसाब लगाने लगे। वे अपने जीवन के प्रश्नों का भी हल सोचने लगे।

उनके मन में दो बातें उठ रहीं थी। वे देश भक्ति करना चाहते थे, और ईश्वर भक्ति भी। वे देश को ऊंचा उठाना चाहते थे और आत्मा को भी। दोनों ही ओर बढ़ने के लिए आगे पढ़ना बेकार था। दोनों ही ओर बढ़ने के लिए बड़ी नौकरी करना बेकार था। दोनों ही ओर बढ़ने के लिए धन कमाना बेकार था। उसके लिए तो त्याग और तपस्या की जरूरत थी। उसके लिए तो सेवा और बलिदान की जरूरत थी। अतः एका-एक उन्हें मराठों के इतिहास की एक घटना याद आई। उन्हें अपने जीवन का हल मिल गया।

सिंहगढ़ विजय की एक घटना उन्हें याद आई। रात का समय था। शिवाजी के सिपाही रस्से के सहारे सिंहगढ़ के किले पर चढ़ गये। ऊपर पहुँचते ही लड़ाई शुरु हो गई। शिवाजी के सिपाही कम थे। दुश्मन ज्यादा

थे। फिर भी मराठे बड़ी वीरता से लड़े। उनके सेनापति तानाजी मारे गये। अब तो मराठे हिम्मत हारने लगे। वे भागजाने का विचार करने लगे। तानाजी के भाई सूर्याजी थे। वे सेना का संचालन कर रहे थे। उन्हें यह बात बहुत बुरी लगी। उन्होंने आगे जाकर रस्सा काट दिया। क्योंकि इसी रस्से से चढ़कर वे वहां आये थे। इसी रस्से से उतर कर वे भागना चाहते थे।

रस्सा कटते ही भागने का रास्ता बन्द हो गया। अब भागने का विचार हवा हो गया। रस्सा कटते ही मराठों में बल आ गया। अब वे मरने के लिए तैयार हो गये। वे बड़ी वीरता से प्राणों की बाजी लगाकर लड़े। नतीजा यह निकला कि दुश्मनों के छक्के छूट गये। वे पराजित हो गये। अब क्या था किले पर मराठों का अधिकार हो गया।

विनोबा को रस्सा काटने की नीति पसन्द आई। उन्हें अपने प्रश्न का हल मिल गया। आगे का रास्ता साफ हो गया। अतः एक दिन चूल्हे के पास पहुँचे। वे अपने साथ सब सर्टीफिकेट भी ले गये। माँ खाना बना रही थी। वे एक-एक कर सारे सर्टीफिकेट जलाने लगे। माँ ने पूछा—

"यह क्या है?"

"सर्टीफिकेट जला रहा हूँ।"

"क्यों ?"

"मुझे अब इनकी जरूरत नहीं है।"

"जरूरत नहीं है, फिर भी पड़े रहें तो क्या हर्ज है।"

"मुझे तो हमेशा के लिए यह रास्ता बन्द करना है।" माँ चुप रह गईं। विनोबा ने रस्सा काट दिया। विनोबा ने आगे का रास्ता बन्द कर दिया। उन्होंने अपना प्रश्न हल कर लिया।

इन्हीं दिनों इन्टर की परीक्षा होने वाली थी। उन्हें परीक्षा देने बम्बई जाना था। अपने साथी विद्यार्थियों के साथ वे बम्बई रवाना हुए। जब सूरत स्टेशन आया तो वे उतर पड़े। मित्र और साथी चकित रह गये। सबने कहा परीक्षा देकर चले जाना। सबने कहा बी. ए. पास करके चले जाना। लेकिन विनोबा ने किसी की बात नहीं सुनी। विनोबा ने तो रस्सा काटने की नीति अपना ली थी। वे दूसरी ट्रेन में सवार हो गये और बंगाल की ओर चल पड़े।

बंगाल में वे इधर उधर घूमे। इधर उधर क्रान्तिकारियों से मिले। लेकिन उन्हें वहां का रहना अच्छा नहीं लगा। उन्हें वहां का आन्दोलन अच्छा नहीं लगा। वे काशी आ गये। यहां उन्होंने संस्कृत पढ़ना प्रारंभ किया। उन्होंने धार्मिक ग्रन्थ पढ़ना प्रारंभ किया।

आध्यात्मिक साधना प्रारंभ हो गई। वे प्रतिदिन प्राणायाम का अभ्यास करते। वे प्रतिदिन आसन का अभ्यास करते। वे प्रतिदिन कड़े जीवन का अभ्यास करते।

वे प्रतिदिन गंगा के किनारे जाते, वे प्रतिदिन गंगा में स्नान करते। वे उसकी शोभा देखते रहते। वे प्रतिदिन एक दो भजन रचते और उन्हें गंगा को सुनाते। लेकिन उन भजनों को गंगा के ही अर्पण कर देते थे। उन्होंने अपने लिखे हुए लेख गंगा में बहा दिये। अपने रचे हुए भजन गंगा के अर्पण कर दिये। उन्होंने अपने सारे भजन गंगा के सिपुर्द कर दिये।

अब वे मोह से मुक्त होने की साधना करने लगे। अब वे राग-द्वेष से मुक्त होने की साधना करने लगे। अब वे कण-कण में ईश्वर को देखने का प्रयत्न करने लगे।

: ५ :

गांधीजी के आश्रम में

काशी में पं० मदन मोहन मालवीय एक बहुत बड़ा विश्वविद्यालय बना रहे थे। वे इसके लिए बहुतसा पैसा इकट्ठा कर रहे थे, बहुत सी जमीन इकट्ठी कर रहे थे। वे

इसके लिए बहुत से अच्छे, विद्वान इकट्ठे कर रहे थे। जब सब तैयारी हो गई तो उन्होंने उसके उद्घाटन की तिथि निश्चित की। उन्होंने देश भर के बहुत से मेहमानों को निमन्त्रण दिया। उन्होंने बड़े बड़े राजाओं और विद्वानों को निमन्त्रण दिया। उन्होंने देश के बड़े बड़े नेताओं को भी निमन्त्रण दिया।

उन दिनों गांधीजी अफ्रिका से आये ही थे। उन दिनों वे कोचरब मोहल्ले में रहते थे। गोखलेजी के आदेशानुसार वे देश की स्थिति का अध्ययन कर रहे थे। मालवीयजी के निमन्त्रण पर वे काशी आये। मालवीयजी के निमन्त्रण पर वाइसराय भी काशी आये थे। बहुत से राजा महाराजा भी काशी आये थे। डा० बीसेन्ट भी काशी आई थीं। समारोह प्रारंभ हुआ। बड़ी शान से वाइसराय की सवारी निकली। बड़े ठाट बाट से उद्घाटन हुआ।

मालवीयजी ने सभी बड़े बड़े विद्वानों से भाषण देने के लिए कहा। एक दिन गांधीजी का भी भाषण रखा गया। उनसे भी अपने विचार प्रकट करने के लिए कहा गया। गांधीजी बोलने को खड़े हुए। उन्होंने कहा—यहां वाइसराय का भाषण हुआ। राजा महाराजाओं और नेताओं के भी भाषण हुए। सबने गरीबी मिटाने की बात कही। सबने अशिक्षा मिटाने की बात कही। सबने किसानों की हालत सुधारने

की बात कही। लेकिन यहां कितनी सजावट थी? कितनी शान शौकत थी? यहां कितना वैभव का प्रदर्शन था?

उन्होंने कहा—जब तक देश गरीब है ठाटबाट से रहना चोरी है। जब तक देश गुलाम है शान शौकत से रहना पाप है। जब तक देश दुःखी है आराम से रहना अपराध है। इसलिए मैं राजा महाराजाओं से कहूंगा कि वे गरीबी मिटाने में अपना रुपया खर्च कर दें। इसलिये मैं नेताओं से कहूंगा कि वे गुलामी मिटाने में अपनी शक्ति लगा दें। क्योंकि गरीबों की उन्नति से ही देश की उन्नति होगी। किसानों मजदूरों की उन्नति से ही देश की उन्नति होगी।

उन्होंने सरकार से कहा कि यहां वाइसराय की रक्षा के लिए इतनी पुलिस तैनात क्यों की गई? यहां लोगों पर कड़ी नजर रखने के लिये इतनी खुफिया पुलिस तैनात क्यों की गई? आज सरकार जनता से इतनी क्यों डरती है? अधिकारी जनता से इतने क्यों डरते हैं? जनता सरकार पर इतना अविश्वास क्यों रखती है? अब सरकार को यह भय और अविश्वास मिटाना ही चाहिए। उसे यह दुर्भावना मिटानी ही चाहिए।

उन्होंने देश के क्रान्तिकारियों से कहा—मैं तुम्हारी देश भक्ति की प्रशंसा करता हूं। तुम्हारे त्याग का आदर करता हूं। लेकिन क्या बम फेंकने में बहादुरी है? क्या हत्या करने में

वीरता है ? क्या डाके डालने में बड़प्पन है ? क्या छिपे छिपे फिरने में साहस है ? क्या नैतिकता और धर्म ऐसा करने के लिए कहते हैं ? क्या मानवता ऐसा करने के लिए कहती है ?

उन्होंने कहा—अगर अंग्रेजों का यहां रहना मुझे पसन्द न होगा तो मैं खुले आम कहूंगा कि वे चले जाय। मैं खुले आम कहूंगा कि वे भारत छोड़ दें। अगर इसके लिए सजा मिलेगी तो मैं खुशी खुशी भोगूंगा। यदि प्राण दण्ड मिलेगा तो मैं खुशी खुशी तैयार हो जाऊंगा। मैं ऐसी मौत को प्रशंसनीय समझता हूं। मैं ऐसी मौत को सम्मान योग्य समझता हूं। मैं ऐसी मौत को पवित्र समझता हूं।

सभा की अध्यक्ष श्रीमती एनी बीसेन्ट को भाषण अच्छा नहीं लगा। उनको वाइसराय तथा राजा महाराजाओं पर की गई टीका टिप्पणी अच्छी नहीं लगी। उन्होंने गांधीजी से भाषण बन्द करने के लिए कहा। लेकिन लोगों ने यह बात पसन्द नहीं की। उन्होंने गांधीजी से कहा आप भाषण जारी रखिये। गांधीजी कहते गये और श्रीमती एनी बीसेन्ट उठकर चली गईं। राजा महाराजा भी उठकर चले गये। उनको यह भाषण पसन्द नहीं आया। उनको यह भाषण बुरा लगा। लेकिन विद्यार्थियों को यह भाषण बहुत पसन्द आया। जनता को यह भाषण बहुत अच्छा लगा।

विनोबाजी ने इस भाषण की चर्चा सुनी। उन्होंने इस

भाषण को अखबार में पढ़ा। वे इन विचारों से प्रभावित हुए। उन्होंने गांधीजी को पत्र लिखा। उन्होंने गांधीजी के सामने अपनी शंकाएं रखी और उनसे कुछ प्रश्न किये। गांधीजी ने उनको अहमदाबाद बातचीत करने के लिए बुलाया।

विनोबाजी अहमदाबाद गये। उन्होंने देखा गांधीजी बहुत सादगी से रहते हैं वे बहुत कम खर्च से काम चलाते हैं। सदा गरीबों की सेवा में लगे रहते हैं। वे त्याग और तपस्या का जीवन बिताते हैं। जैसा बोलते हैं, वैसा ही करते हैं। जैसा करते हैं वैसा ही कहते हैं। विनोबा को यह सब बहुत पसन्द आया। गांधीजी ने उनसे वहीं रहकर सेवा करने के लिये कहा। विनोबा ने वहीं रहना स्वीकार कर लिया।

विनोबा आश्रम में रहने लगे। वे कड़ा परिश्रम करने लगे। वे आश्रम में कम से कम बोलते और ज्यादा से ज्यादा काम करते थे। वे कम से कम चीजें लेते थे और ज्यादा से ज्यादा सेवा करते थे। वे दूसरों को कम से कम कष्ट देते थे और स्वयं ज्यादा से ज्यादा कष्ट उठाते थे।

बीच में वे एक वर्ष की छुट्टी लेकर गये। उन्होंने छः महीने तक संस्कृत का अध्ययन किया। छः महीने तक

महाराष्ट्र का भ्रमण किया। इस भ्रमण में वे एक गांव में तीन दिन ठहरते। वहां तीन दिन भाषण देते। उनका गीता का ज्ञान देखकर लोग बड़े प्रभावित होते। उनकी साधना को देखकर लोग बड़े आकर्षित होते। उनकी तेजस्विता देखकर चकित होते। उन्होंने महाराष्ट्र के सारे ऐतिहासिक और धार्मिक स्थान देखे। उन्होंने महाराष्ट्र के सारे सांस्कृतिक स्थान देखे।

एक वर्ष बाद वे ठीक उसी दिन आश्रम में लौट आये। एक वर्ष बाद वे ठीक उसी समय पर आश्रम में लौट आये। अब वे फिर आश्रम के काम में लग गये। वे फिर गांधीजी के काम में लग गये।

एकाएक उनको खबर मिली कि माँ बीमार है। वह उनको देखना चाहती है। इसके पहिले भी वे घर पत्र लिख चुके थे और माँ से मिल भी आये थे। इस पत्र के मिलते ही वे घर गये। माँ रोग शैय्या पर पड़ी थीं। वे अन्तिम सांसें ले रही थीं। विनोबाजी ने दो दिन तक दिन-रात माँ की सेवा की। लेकिन माँ चल बसीं। प्रेम मूर्ति माँ की मृत्यु से विनोबा को बड़ा धक्का लगा। लेकिन इस दुःख में भी वे शान्त और दृढ़ रहे। इस दुःख में भी वे तत्वनिष्ठ रहे। तीन दिन बाद वे आश्रम में लौट गये और अपने काम में लग गये।

: ६ :

आश्रम जीवन

क्या आपको विनोबा का सही नाम मालूम है? क्या आपको विनोबा का बचपन का नाम मालूम है? बचपन में माँ उनको 'विनू' कहती थी। पिताजी उनको 'विनू' कहते थे। क्योंकि उनका नाम विनायक था। सब उनको विनायक नाम से पुकारते थे। जब वे साबरमती आये तो गांधीजी ने उनका नाम विनोबा रख दिया। अब सब उन्हें विनोबा कहने लगे।

विनोबा का आश्रम जीवन बड़ा आदर्श और अनुकरणीय था। वे अपने सब काम समय पर करते थे। वे अपने सब काम परिश्रम से करते थे। क्योंकि वे जानते थे कि शरीर तो धर्म साधन का माध्यम है। वह तो आत्मा का वाहन है। अतः शरीर का सुख सच्चा नहीं है। शरीर पर काबू किये बिना आत्मा का विकास नहीं हो सकता, सच्चा सुख प्राप्त नहीं हो सकता। वे जानते थे कि शरीर पर काबू करने के लिए आलस्य पर काबू करना चाहिए। उसके लिए शरीर के सुखों की उपेक्षा करना चाहिए और संयमी जीवन बिताना चाहिए। अतः वे कड़ा शरीरश्रम करने लगे। वे संयमी जीवन बिताने लगे। वे नदी से

पानी लाकर बगीचे को सींचते। आश्रम वासियों के लिए खाना बनाते। कताई धुनाई का काम करते। आश्रम की सफाई करते। वे छः-छः आठ-आठ घंटे तक ये काम करते रहते।

कई महिनों तक वे ऐसा करते रहे। उन्होंने गांधीजी से किसी की निन्दा नहीं की। गांधीजी से किसी की शिकायत नहीं की। उन्होंने गांधीजी से कोई सुविधा नहीं मांगी, कोई आराम नहीं मांगा।

उनका कड़ा परिश्रम देखकर आश्रमवासी चकित रह गये। उनकी लगन देखकर गांधीजी मुग्ध हो गये। एक दिन गांधीजी ने पूछा-विनोबा, तुम बहुत दुबले पतले हो। तुम्हारा शरीर बहुत कमजोर लगता है। फिर भी तुम इतना कड़ा शरीरश्रम कैसे कर लेते हो ? विनोबा ने संक्षेप में जवाब दिया—"काम करने की इच्छा शक्ति से।"

विनोबा का उत्तर बिलकुल ठीक था। जब हममें काम करने की लगन होती है तब काम अधिक होता है। जब हममें काम करने की इच्छा शक्ति होती है तब काम अधिक होता है। जब हम काम करने का दृढ़ निश्चय कर लेते हैं तब काम अधिक होता है। क्योंकि दृढ़ निश्चय में पहाड़ों को हिला देने की शक्ति होती है। इच्छा शक्ति में कठिन को सरल बना देने की शक्ति है। पक्की लगन में

असंभव को संभव बना देने की शक्ति है।

आश्रम के पास एक छात्रावास था। वहां छोटे-छोटे विद्यार्थी रहते थे। विनोबाजी को छात्रावास की देख रेख का काम मिला। उन्हें विद्यार्थियों को समय पर जगाना था। समय पर खाना खिलाना था। उन्हें विद्यार्थियों की सफाई और स्वास्थ्य का ख्याल रखना था। विनोबा ने यह काम भी स्वीकार कर लिया। वे यह काम भी करने लगे।

विनोबा किसी काम को छोटा नहीं समझते। वे किसी काम को नीचा नहीं मानते। वे कहते हैं कि सभी काम बड़े हैं। सभी काम अच्छे हैं। अच्छी भावना से काम अच्छा होता है। उंची भावना से काम उंचा होता है। वे हर काम को ईश्वर पूजा मानकर करते हैं। वे हर काम को समाज सेवा मानकर करते हैं। इसीलिए उनके सब काम उंचे और अच्छे होते हैं।

विनोबा के पहले बच्चों को डाट फटकार से जगाया जाता था। उन्हें चिल्ला-चिल्लाकर और झकझोर कर जगाया जाता था। लेकिन विनोबा तो बच्चों को ईश्वर मानते थे। वे तो इस काम को ईश्वरोपासना मानकर करते थे। अतः वे बच्चों को प्यार से पुकारते, आदर से पुकारते। वे बच्चों को मीठे स्वर से जगाते। परिणाम यह हुआ कि बच्चे उनसे बड़े खुश रहने लगे। बच्चे अच्छी आदतें

सीखने लगे। बच्चों का ठीक विकास होने लगा।

कुछ दिन विनोबाजी ने शिक्षक का भी काम किया। यह काम भी उन्होंने इसी भावना और इसी तन्मयता से किया। उनके इस काम से बालकों में हलचल मच गई। शिक्षकों में हलचल मच गई। विनोबा इस नतीजे पर पहुंचे कि यदि इस दिशा में कुछ अधिक सोचा जाय तो सारे देश में हलचल की जा सकती है। यदि इस दिशा में कुछ अधिक काम किया जाय तो शिक्षा के क्षेत्र में हलचल पैदा की जा सकती है। और सचमुच आगे चलकर उन्होंने बुनियादी तालीम के द्वारा देश में हलचल मचा दी।

एक दिन गुजरात विद्यापीठ के बालकों ने गांधीजी से पूछा क्या पाखाना सफाई अच्छा काम है? क्या उससे कुछ सीखा जा सकता है? गांधीजी बोले—हाँ वह अच्छा काम है। उससे बहुत सी शिक्षा मिल सकती है।

लेकिन गांधीजी जवाब देकर ही चुप न रहे। वे काम करने को तैयार हो गये। बोले—जो पाखाना सफाई को अच्छा काम समझते हों वे आगे आ जायं। जो पाखाना सफाई से कुछ सीखना चाहें वे कल से मेरे साथ काम करें। बेचारे शिक्षक बगलें झांकने लगे। बेचारे विद्यार्थी बगलें झांकने लगे। कोई मुँह छिपाने लगा, कोई खिसकने लगा और कोई बहाने सोचने लगा। लेकिन विनोबाजी आगे बढ़े।

उन्होंने पाखाना सफाई का काम अपने ऊपर ले लिया। वे इस काम को महिनों करते रहे। यह काम भी उन्होंने उसी तन्मयता से किया। यह काम भी उन्होंने ईश्वरोपासना मानकर किया। यही उनकी महानता है।

इन दिनों सेठ जमनालालजी बजाज आश्रम में आया करते थे। वे आश्रम जीवन से बड़े प्रभावित हुए। वे गांधीजी से बड़े प्रभावित हुए। एक दिन गांधीजी से बोले—वर्धा चलिए। वहीं आश्रम बनाइये। उस आश्रम में ही रहिए। लेकिन गांधीजी ने कहा—मैं तो गुजाराती हूँ। गुजरात में ही रहूंगा। गुजरात की ही सेवा करुंगा। गुजरात के द्वारा ही देश सेवा करुंगा।

जमनालालजी चुप रह गये। लेकिन कुछ दिनों बाद फिर उन्होंने गांधीजी से कहा—विनोबा को ही वहां भेज दीजिये। उन्हें ही वहाँ आश्रम बनाने दीजिये। गांधीजी ने यह बात मान ली। उन्होंने विनोबा को वर्धा भेज दिया।

वर्धा जाकर विनोबा ने सत्याग्रह आश्रम की स्थापना की। वहां कुछ कार्यकर्त्ताओं के साथ वे रहने लगे। साबरमती में विनोबा की दृष्टि अपने ऊपर थी। वहां वे अपनी साधना में मग्न रहते थे लेकिन यहां तो उनको आश्रम की देख रेख करनी थी। अतः उन्होंने कार्यकर्त्ताओं पर भी दृष्टि रखी। उन्होंने उनके जीवनको बनाने की बात भी सोची।

उन्होंने आश्रम वासियों के लिए ११ व्रत बनाए। उन्होंने कहा आश्रम वासियों को अहिंसा और सत्य का पालन करना चाहिए। अस्तेय और ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना चाहिए। उन्होंने कहा आश्रम वासियों को असंग्रह व्रत का पालन करना चाहिए और शरीरश्रम करना चाहिए। उन्होंने कहा आश्रम वासियों को अस्वाद व्रत का पालन करना चाहिए और निर्भय रहना चाहिए। उन्हें सब धर्मों को समान मानना चाहिए और स्वदेशी का व्रत लेना चाहिए। आश्रम वासियों को छुआ छूत नहीं मानना चाहिए। इन्हीं ग्यारह व्रतों में विनोबा का आदर्श समाया हुआ है। उन्होंने इन व्रतों को एक छन्द में इस तरह पिरो दिया है।

अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य असंग्रह
शरीरश्रम अस्वाद सर्वत्र भय वर्जन
सर्व धर्मी समानत्व स्वदेशी स्पर्श भावना
ही एकादश सेवावीं नम्रत्वे व्रत निश्चये

विनोबा इन नियमों का पालन बड़ी कड़ाई से करते और करवाते थे। नियमों के पालन में न उन्हें ढील-ढाल सहन होती थी न सुस्ती। नियमों के पालन में वे कोई अपवाद भी सहन नहीं करते थे। इसीलिए ढीले-ढाले लोग भाग खड़े होते थे। इसीलिए सुस्त लोग उनसे डरते थे।

: ७ :

दो सत्याग्रह

सन् १९२३ की बात है। १३ अप्रेल को नागपुर में राष्ट्रीय झण्डे का जुलूस निकला। यह जुलूस जलिया वाले बाग के शहीदों की स्मृति में निकला था। पुलिस ने जुलूस रोक दिया। उसने स्वयंसेवकों को गिरफ्तार कर लिया। जमनालालजी बजाज को यह बात अच्छी नहीं लगी। उन्होंने सत्याग्रह छेड़ दिया। पुलिस नें उन्हें भी गिरफ्तार कर लिया और जेल भेज दिया।

अब तो कांग्रेस ने सारे देश के कार्यकर्त्ताओं से सत्याग्रह करने के लिए कहा। सबसे झण्डे की शान रखने को कहा। दूर दूर से स्वयंसेवक आने लगे। दूर दूर से कार्यकर्त्ता आने लगे। रोज झण्डे का जुलूस निकलने लगा। रोज कार्यकर्त्ता गिरफ्तार होने लगे। रोज कार्यकर्त्ता जेल जाने लगे।

विनोबा को भी राष्ट्रीय झण्डे का अपमान अच्छा नहीं लगा। बाहर के लोग नागपुर आएं और वे चुपचाप बैठे रहें यह उन्हें कैसे सहन होता ? बाहर के लोग सत्याग्रह करें और वे चुपचाप रहें यह उन्हें कैसे सहन होता। वे भी सत्याग्रह के लिए तैयार हो गये। वे भी जेल जाने के

लिए तैयार हो गये। यह बात लोगों को मालूम हुई। यह बात पुलिस को भी मालूम हुई। उसने सत्याग्रह करने के पहिले ही उन्हें गिरफ्तार कर लिया और जेल भेज दिया।

दूर दूर से स्वयंसेवक नागपुर आ रहे थे। सत्याग्रह बढ़ता जा रहा था। आन्दोलन शक्तिशाली होता जा रहा था। जेलें भरती जा रही थीं और असन्तोष भी फैलता जा रहा था। अतः सरकार परेशान होगई। आखिर उसने प्रतिबन्ध हटा लिया। उसने जेलें खाली करदी। उसने सत्याग्रहियों को मुक्त कर दिया। विनोबा भी मुक्त हो गये।

मुक्त होते ही विनोबा आश्रम के काम में लग गये। वे रचनात्मक कार्य में लग गये। कुछ दिन बाद व्हायकोम में हलचल प्रारंभ हुई। वहां हरिजनों के साथ बड़ा बुरा व्यवहार होता था। उन्हें आम कुओं से पानी नहीं लाने दिया जाता था। उन्हें आम रास्तों पर चलने नहीं दिया जाता था। उन्हें सार्वजनिक मन्दिरों में घुसने नहीं दिया जाता था। कुछ उत्साही लोगों ने इसका विरोध किया। कुछ सुधारकों ने इसका विरोध किया।

वे गांधीजी के पास सलाह लेने आये। वे गांधीजी के पास मार्गदर्शन के लिए आये। वे गांधीजी को व्हाय-कोम ले जाने के लिए आये। लेकिन गांधीजी तो अस्वस्थ

थे। वे तो वहां जाने में असमर्थ थे। उन्होंने विनोबाजी को व्हायकोम जाने के लिए कहा।

विनोबाजी व्हायकोम गये। उन्होंने सत्याग्रह प्रारम्भ किया। उन्होंने कहा—सत्याग्रही उसी आम रास्ते से जाय। सत्याग्रही पूरी तरह अहिंसक बने रहें। वे कठिनाइयों से विचलित न हों। सत्याग्रही चले। ब्राह्मणों ने उन्हें रोका। पुलिस ने उन्हें रोका। दोनों ने उन्हें पीटा। पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार किया और सजा दी। लेकिन प्रतिदिन नये-नये सत्याग्रही सत्याग्रह करते रहे। प्रतिदिन नये नये सत्याग्रही जेल जाते रहे।

आखिर सरकार तंग आ गई। ब्राह्मण लोग भी तंग आगये। उनके मन में हरिजनों के लिए प्रेम पैदा हुआ। उनके लिए सहानुभूति पैदा हुई। उन्होंने प्रतिबन्ध उठा लिया। उन्होंने कैदियों को छोड़ दिया। सत्याग्रह समाप्त होगया। विनोबाजी लौट आये।

विनोबाजी फिर अपने काम में लग गये। वे फिर आश्रम के काम में लग गये। वे चाहते थे कि आश्रम ऋषियों के आश्रम जैसा बने। वे चाहते थे कि आश्रम ज्ञान-विज्ञान और उद्योग-धन्धों का केन्द्र बने। वे चाहते थे कि आश्रम सेवा और तपस्या का केन्द्र बने। वे चाहते थे कि बाहर से साधक और तपस्वी आएं। वे चाहते थे कि बाहर

से राजनीतिज्ञ और नेता आएं। वे चाहते थे कि बाहर से विचारक और विद्वान आएं। सब भिन्न-भिन्न विषयों पर चर्चा करें। सब अपने अपने प्रश्न रखें, समस्याएं रखें। आश्रमवासी सबका समाधान करें। वे सबका हल बताएं, सबको नई प्रेरणा दें। सबको वहाँ शान्ति मिले। सबको वहाँ आनन्द मिले।

आश्रम को ऐसा ही बनाने में वे लग गये। आश्रम में ऐसे नये नये प्रयोग करने में ही वे लग गये। स्वावलम्बन के प्रयोग होने लगे। सत्य के प्रयोग होने लगे। अहिंसा के प्रयोग होने लगे। विनोबाजी सबको रास्ता दिखाते रहे। विनोबाजी सबको स्फूर्ति देते रहे।

इन्हीं दिनों गांधीजी ने दिल्ली में उपवास किया। यह उपवास २१ दिन का था। यह उपवास हिंदू-मुस्लिम एकता के लिए था। गांधीजी ने उन्हें दिल्ली बुलाया। वे दिल्ली गये। उपवास के दिनों वे गांधीजी की सेवा करते रहे। उपवास के दिनों वे गांधीजी को गीता और उपनिषद् सुनाते रहे। उपवास के दिनों वे प्रार्थना में प्रवचन करते रहे। उपवास समाप्त होने पर वे गांधीजी के साथ लौट आये। वे फिर अपने काम में लग गये।

: ८ :

धूलिया जेल से परंधाम में

विनोबाजी की दिलचस्पी बड़ी बड़ी राजनीति की बातों में नहीं है। उनकी दिलचस्पी बड़े बड़े भाषण देने में नहीं है। उनकी दिलचस्पी तो देश की गरीबी और अशिक्षा मिटाने के काम में है। उनकी दिलचस्पी तो देश की उंच नीच मिटाने और रचनात्मक कामों को आगे बढ़ाने में है। अतः वे इन्हीं कामों में लगे रहते हैं।

लेकिन वे देश की हालत से बेखबर नहीं रहते थे। वे देश की उपेक्षा नहीं करते थे। सन् १६३० में नमक सत्याग्रह शुरु हुआ। गांधीजी ने कहा—सब लोग सरकार की आज्ञा मानने से इन्कार कर दें। सरकार के कानून मानने से इन्कार करदें। सब लोग नमक बनाएं, ताड़ के पेड़ काटें और आन्दोलन में भाग लें।

विनोबाजी ने भी गांधीजी का सन्देश सुना। उन्होंने भी देश की पुकार सुनी। वे उतने ही उत्साह से ताड़ के पेड़ काटने लगे और आन्दोलन में भाग लेने लगे। वे उतने ही उत्साह से कानून भंग करने लगे लेकिन सरकार ने उन्हें जेल नहीं भेजा।

सन् १६३१ में खानदेश में एक सत्याग्रही कार्य-

कर्त्ताओं का सम्मेलन हुआ। विनोबाजी से उसका अध्यक्ष बनने के लिए कहा गया। उनसे सत्याग्रहियों को रास्ता दिखाने के लिए कहा गया। विनोबाजी ने इसे स्वीकार कर लिया। वे सम्मेलन में गये। उन्होंने वहां बड़ा ओजस्वी भाषण दिया। वे बोले—महात्माजी का सत्याग्रह देश के युवकों और बूढ़ों को पुकार रहा है। वह देश की स्त्रियों और बच्चों को पुकार रहा है। सबको उसे अपनाना चाहिए। सबको उसमें भाग लेना चाहिए। क्योंकि वह राम नाम की तरह सबके लिए है। वह राम नाम की तरह पवित्र और प्रभावशाली है। उनके भाषण से आन्दोलन को नया बल और सत्याग्रहियों को नई प्रेरणा मिली।

सन् १९३२ में फिर सत्याग्रह छिड़ा। फिर कानून भंग होने लगा। विनोबाजी फिर आगे आये। उन्होंने फिर धूलिया में जनता और कार्यकर्त्ताओं के सामने भाषण दिया। वे जलगांव भी भाषण देने गये। लेकिन सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और धूलिया जेल भेज दिया।

जेल में बहुत से सत्याग्रही आगये। वहां जमनालालजी बजाज और गोपालरावजी काले आगये। रामेश्वरजी और साने गुरुजी आगये। वहां द्वारकानाथजी लेले तथा अन्य बहुत से लोग आ गये। ये सब प्रतिदिन तकली चलाते। सब प्रतिदिन चक्की चलाते। प्रतिदिन

अच्छी-अच्छी चर्चाएं करते।

जेल में कुछ लोगों को 'बी' क्लास में रखा गया, कुछ लोगों को 'सी' क्लास में। विनोबाजी को 'बी' क्लास मिली। दूसरे कुछ लोगों को भी 'बी' क्लास मिली। लेकिन बहुत से लोगों को 'सी' क्लास मिली। 'बी' क्लास वालों को कुछ अच्छा खाना मिलता था। 'बी' क्लास वालों को कुछ ज्यादा सुविधाएं दी जाती थीं।

विनोबाजी को यह भेद-भाव अच्छा नहीं लगा। वे बोले—जब दूसरों को अच्छा खाना नहीं मिलता है तो मैं अच्छा खाना कैसे खाऊं? जब दूसरों को सुविधाएं नहीं मिलती हैं तो मैं उनसे लाभ क्यों उठाऊं? विनोबाजी ने 'बी' क्लास छोड़ दी। उन्होंने सारी सुविधाएं त्याग दी।

एक दिन कार्यकर्त्ताओं ने विनोबाजी से प्रार्थना की कि वे गीता पर प्रवचन करें। विनोबाजी ने इसे स्वीकार कर लिया। वे सप्ताह में एक दिन भाषण देने लगे और एक-एक अध्याय का मर्म समझाने लगे। साने गुरुजी ने इन प्रवचनों को लिख लिया। उन्होंने उसे पुस्तक के रूप में तैयार कर लिया। ये प्रवचन बड़े ही गंभीर हैं, मार्मिक हैं। बड़े होने पर आपको ये जरुर पढ़ने चाहिए।

जेल से छूटने के बाद वे गांवों की सेवा में लग गये। उन्होंने अनुभव किया कि गांवों की उन्नति के बिना देश की

उन्नति नहीं होगी। ग्रामीणों की उन्नति के बिना देश की उन्नति नहीं होगी। क्योंकि सच्चा देश तो गांवों में है। सच्चा ईश्वर तो ग्रामों में है। ईश्वर वहीं रहता है जहां गरीब लोग रहते हैं, जहां तिरस्कृत और पिछड़े हुए लोग रहते हैं। उन्होंने अपने साथियों से कहा—गाँव में हम ईश्वर पूजा के लिए जाएंगे। हमारा ईश्वर आज दीन हीन है, वह नंगा और भूखा है। वह असभ्य और अशिक्षित है। अतः हमारे मन में जरा भी घृणा और शिथिलता नहीं आनी चाहिए। जरा भी उदासी और अश्रद्धा नहीं आनी चाहिए।

विनोबा इसी भावना से अपने कार्यकर्त्ताओं के साथ ग्रामों में जाने लगे। अब नालवाड़ी में आश्रम बनाया गया। यहां सब कार्यकर्त्ता हर १५ वें दिन आते और रिपोर्ट देते। इस दिन सब कार्यकर्त्ता दूसरों के अनुभव का लाभ उठाते।

प्रति वर्ष ग्राम सेवकों के एक मेले का आयोजन किया जाने लगा। इस दिन सब लोग इकट्ठे होते। मेले में वे खादी और ग्रामोद्योग के बारे में विचार करते। ग्रामीणों की शिक्षा और स्वास्थ्य के बारे में विचार करते। यह मेला बहुत दिनों तक लगता रहा। यह कार्य-क्रम कई दिनों तक चलता रहा।

इतने कड़े काम के कारण सन् १९३८ में विनोबा का स्वास्थ्य गिरने लगा। वे कमजोर होने लगे। क्योंकि वे लोगों को अपने काम से और अपने ही उदाहरण से शिक्षा देते थे। अतः कार्यकर्त्ता चिन्तित हुए। गांधीजी भी चिन्तित हुए। उन्होंने कहा—विनोबाजी को आराम करना चाहिए। उन्होंने कहा—विनोबाजी को यह जगह छोड़नी चाहिए। अतः विनोबाजी पौनार जाकर रहने लगे। उन्होंने इस आश्रम का नाम रखा 'परंधाम'। परंधाम का अर्थ है स्वर्ग। यहां आकर मानों वे जीते जी ही स्वर्ग पहुँच गये थे। मानों वे जीते जी ही ईश्वर के पास पहुँच गये थे। विनोबा के पास जाने पर ऐसा लगता है मानों वे सचमुच परंधाम में रहते हैं। मानो वे जीते जी ही ईश्वर के पास पहुँच गये हैं।

: ९ :

रचनात्मक कार्य

देश में इस समय जागृति हो रही थी। सब चाहते थे कि देश की गुलामी हट जाय। देश की गरीबी मिट जाय और देश का नैतिक पतन रुक जाय। इसलिए सब चाहते थे कि अंग्रेज नहीं रहें और अंग्रेजी सरकार भी नहीं

रहे। लेकिन देश के नेताओं का एक दल कहता था चुनाव लड़ो। धारा-सभाओं में जाओ। सरकारी नीति की आलोचना करो। सरकार के काम में बाधा डालो। अच्छे-अच्छे कानून पास करो। तभी देश आजाद होगा। तभी देश की उन्नति होगी।

लेकिन दूसरा दल कहता था गांवों में जाओ। जनता के पास जाओ। उनको चर्खा चलाना सिखाओ। उनको ग्रामोद्योग सिखाओ। उनको पढ़ना-लिखना सिखाओ। उनको उन्नत बनाओ। तभी देश आजाद होगा। तभी देश की उन्नति होगी।

पहिले दल के नेता थे मोतीलालजी नेहरु और देशबन्धुदास। दूसरे दल के नेता थे राजाजी और सरदार पटेल। पहिले दल के काम को पार्लियामेन्टरी कार्यक्रम कहते हैं। उसके द्वारा ऊपर से सुधार होता है। दूसरे दल के काम को रचनात्मक कार्य कहते हैं। उसके द्वारा नीचे से सुधार होता है।

रचनात्मक कार्य का मन्त्र गांधीजी ने दिया था। रचनात्मक कार्य का कार्यक्रम गांधीजी ने बनाया था। रचनात्मक कार्य का संगठन गांधीजी ने किया था। विनोबा तो गांधीजी के दाहिने हाथ थे। वे तो गांधीजी के सच्चे सहयोगी थे। अतः वे पूरी तरह रचनात्मक कार्य में लग

गये। विनोबा के लिए रचनात्मक कार्य देश सेवा का साधन बन गया। उनके लिए रचनात्मक कार्य आत्मोन्नति का साधन बन गया। उनके लिए रचनात्मक कार्यक्रम ईश्वर की उपासना बन गया।

रचनात्मक कार्य में पहिला स्थान है कौमी एकता का। कौमी एकता का अर्थ यह है कि हिन्दू और मुसलमान एक हैं। बौद्ध और जैन एक हैं। ईसाई और पारसी एक हैं। सबके साथ प्रेम से रहना चाहिए। सब धर्मों का आदर करना चाहिए। सबके साथ अपनापन रखना चाहिए।

सब धर्मों को समझने के लिए विनोबा ने मुसलमानों का कुरान पढ़ा। ईसाईयों की बाइबिल पढ़ी। हिन्दुओं के वेद उपनिषद् पढ़े। बौद्धों के धर्म ग्रन्थ पढ़े। जैनियों की पवित्र पुस्तकें पढ़ी। सब धर्मों को समझने के लिए उन्होंने फारसी और अरबी भाषा सीखी। अंग्रेजी और फ्रेंच भाषा सीखी। हिन्दी और संस्कृत भाषा सीखी। बंगला और गुजराती भाषा सीखी। तेलगू और तामिल भाषा सीखी। वे सब में प्रेम बढ़ाने का प्रयत्न करते रहे। वे सब में मेल बढ़ाने का प्रयत्न करते रहे।

रचनात्मक कार्य में दूसरा स्थान है छुआछूत मिटाने का। छुआछूत मिटाने का अर्थ है हरिजनों को अपने

बराबर मानना। उनके साथ अच्छा व्यवहार करना। विनोबाजी ने कुछ हरिजनों को अपने साथ रखा। उनसे प्रेम का व्यवहार किया और उनकी शिक्षा में दिलचस्पी ली। छुआछूत मिटाने के लिए विनोबाजी ने स्वयं पाखाना साफ करने का काम लिया। वे कई दिनों तक पाखाना साफ करते रहे। वे कई महीनों तक पाखाना साफ करते रहे। साबरमती आश्रम में उन्होंने यह काम किया। वर्धा आश्रम में उन्होंने यह काम किया। सुरगांव में उन्होंने यह काम किया। उन्होंने हरिजनों के लिए मन्दिर खुलवाये। उन्होंने हरिजनों के लिए कुए खुलवाये।

रचनात्मक कार्य में तीसरा स्थान है खादी का। खादी का अर्थ है आर्थिक स्वतंत्रता और आर्थिक बराबरी। खादी का अर्थ है अहिंसक समाज का निर्माण।

खादी के काम के लिये विनोबाजी ने बहुत मेहनत की। उन्होंने अपने कार्यकर्ताओं को खादी के काम में लगाया। उन्होंने खुद कपास बोने का काम किया। उन्होंने खुद औटाई का काम किया। उन्होंने खुद धुनाई का काम किया। उन्होंने खुद कताई का काम किया। उन्होंने खुद कपड़े बुनने का काम किया। वे हर दिन आठ-आठ घंटे तक यह काम करते रहे।

वे हर दिन कार्यकर्ताओं से भी यह काम करवाते रहे।

उन्होंने इस बारे में बहुत काम किया। वे बहुत अच्छा सूत कातते हैं। वे बहुत जल्दी सूत कातते हैं। वे नियमित रूप से सूत कातते हैं। वे बिना सूत काते खाना नहीं खाते। वे बिना सूत काते नींद नहीं लेते।

रचनात्मक कार्यों में चौथा स्थान है ग्रामोद्योग का। ग्रामोद्योग का अर्थ है ग्राम के उद्योग धन्धों की तरक्की करना। गांव में ही आटा पीस लेना, गांव में ही चावल कूट लेना, गांव में ही तेल पेर लेना, गांव में ही चमड़ा कमा लेना, गांव में ही कागज बना लेना और गांव में ही दूसरी सब चीजें बना लेना। विनोबाजी ने गांवों में बहुत काम किया। उन्होंने ग्राम सेवा मण्डल नामक एक संस्था की स्थापना की। जिसके कार्यकर्ता वर्धा के आसपास के कई गांवों में घूमते थे। जिसके कार्यकर्ता यही कार्य करते थे। वर्षों तक वे यह काम करते रहे। विनोबाजी ने उद्योग धन्धों की तरक्की के लिये बहुत काम किया। उन्होंने गांवों में ये ही सब बातें प्रारंभ की। उनके कार्यकर्ताओं ने गांवों में ये ही सब बातें प्रारंभ की। सब गांवों की ही चीजें काम में लेते थे। सब गांवों में ही ये चीजें तैयार करते थे।

रचनात्मक कार्य में पांचवां स्थान है बुनियादी

तालीम का। बुनियादी तालीम का अर्थ है काम के द्वारा शिक्षा। बुनियादी तालीम का उद्देश्य है बच्चों को आदर्श नागरिक बनाना। बुनियादी तालीम का उद्देश्य है देश की नींव मजबूत बनाना। उसका उद्देश्य है गांव के बालकों को कम खर्च में अच्छी शिक्षा देना। उसका उद्देश्य है बालकों के शरीर और मन दोनों का विकास करना।

विनोबाजी ने इस सम्बन्ध में बहुत काम किया। उन्होंने इसी तरीके से बच्चों को पढ़ाया। उन्होंने इसी तरीके से शिक्षकों को पढ़ाया। उन्होंने नये-नये प्रयोग किये। उन्होंने नई-नई दृष्टि दी। उन्होंने नये-नये विचार दिये। उन्होंने नई-नई प्रेरणा दी। वे शिक्षकों को रास्ता दिखाते रहे। वे शिक्षकों का रास्ता साफ करते रहे।

रचनात्मक कार्यों में छटा स्थान है स्त्रियों की उन्नति का। स्त्रियों की उन्नति का अर्थ है—उनकी कुरीतियां मिटाना, उनमें शिक्षा का प्रचार करना, उन्हें पुरुष के बराबरी का दर्जा दिलाना। विनोबाजी ने महिलाश्रम के व्यवस्थापक का काम किया। इन दिनों उन्होंने स्त्रियों की उन्नति के बहुत से काम किये

रचनात्मक कार्य में सातवां स्थान है प्रान्तीय भाषाओं का। विनोबाजी ने सब प्रान्तों की भाषा सीखी है।

वे गुजराती जानते हैं और बंगला भी। वे तेलगू जानते हैं और तामील भी। वे हिन्दी जानते हैं और मराठी भी। इन भाषाओं के सीखने में उन्होंने बड़ा परिश्रम किया। इन भाषाओं के सीखने में उन्होंनें बहुत समय लगाया।

रचनात्मक कार्य में आठवां स्थान है आर्थिक समानता का। आर्थिक समानता का अर्थ है धनी और गरीब का अन्तर मिटाना। उसका अर्थ है पूंजीपति और मजदूर के झगड़े का अन्त करना। उसका अर्थ है धनवानों का पैसा कम करना और गरीबों का पैसा बढ़ाना।

विनोबाजी ने इस दिशा में बहुत काम किया। इसके लिए उन्होंने साम्ययोग शुरू किया। वे कई दिनों तक इसमें जुटे रहे। उन्होंने तेलंगाना की पैदल यात्रा की। उन्होंने दिल्ली की पैदल यात्रा की। उन्होंने अमीरों से जमीन मांगी और गरीबों को जमीन दी। वे खुद गरीबों जैसे रहते हैं। उनके कार्यकर्ता गरीबों जैसे रहते हैं। यह एक बहुत बड़ा कार्य है। लेकिन विनोबाजी इसमें अपनी ज्यादा से ज्यादा शक्ति लगा रहे हैं। इसमें वे ज्यादा से ज्यादा समय लगा रहे हैं।

रचनात्मक कार्य में नवां स्थान है कुष्ठ सेवा का। कुष्ठ सेवा का अर्थ है कोढ़ियों की सेवा। कोढ़ियों की सेवा एक बड़ा ही पवित्र कार्य है। कोढ़ियों की सेवा बड़ी

ही निष्काम सेवा है। विनोबाजी ने इस काम में आजीवन लग जाने वाले कार्यकर्ता तैयार किये। ये कार्यकर्ता कुष्ठ सेवा का काम कर रहे हैं।

विनोबाजी ने इस प्रकार सभी रचनात्मक कार्य किये हैं। वे सभी रचनात्मक कार्यों में लगे हैं। रचनात्मक कार्य उनकी ईश्वर पूजा है। रचनात्मक कार्य उनकी देश सेवा है। वे दिन-रात इन्हीं में लगे रहते हैं। वे दिन-रात इन्हीं में जुटे रहते हैं।

: १० :

प्रथम सत्याग्रही

सन् १६३६ में दूसरा महायुद्ध प्रारंभ हुआ। उस समय लगभग सभी प्रान्तों में कांग्रेस का राज्य था। उस समय लगभग सारी जनता पर कांग्रेस का असर था। अंग्रेजों ने लोगों से कहा—लड़ाई के लिए पैसा दो। अंग्रेजों ने कांग्रेस से कहा—लड़ाई के लिए आदमी दो। अंग्रेजों ने देश से कहा—लड़ाई में शामिल हो जाओ।

लेकिन लोगों ने कहा लड़ाई विनाशकारक है हम पैसा नहीं देंगे। कांग्रेस ने कहा लड़ाई अनैतिक है हम आदमी नहीं देंगे। देश ने कहा लड़ाई अहितकर है मैं

शामिल नहीं होऊंगा। लेकिन सरकार तो लड़ाई में फँस चुकी थी। वह तो देशको लड़ाई में फँसाना चाहती थी। अतः प्रान्तीय सरकारों ने त्याग पत्र दे दिये।

गांधीजी ने कहा हमें खुले आम लड़ाई कर विरोध करना चाहिए। हमें खुले आम कहना चाहिए कि लड़ाई बुरी और अनैतिक है। उन्होंने व्यक्तिगत सत्याग्रह प्रारंभ करने का निश्चय किया। उन्होंने गुण प्रधान सत्याग्रह प्रारंभ करने का निश्चय किया। उन्होंने कुछ थोड़े किन्तु आदर्श सत्याग्रही जेल भेजने का निश्चय किया।

उन्होंने कहा कि सत्याग्रह वही आदमी करे जो सब धर्मों का समान आदर करता हो। जो रचनात्मक कार्य में पूरा विश्वास रखता हो। जो सत्य और अहिंसा का उपासक हो। जो छुआ-छूत को मिटाना चाहता हो। शुद्ध और पवित्र जीवन बिता रहा हो। अतः उनकी दृष्टि ऐसे आदर्श सत्याग्रहियों को ढूंढने लगी। इनमें भी पहिला स्थान देने के लिए उनकी नजर नेहरूजी पर गई। सरदार पटेल पर गई। उनकी नजर सरोजिनी नायडू पर गई। राजेन्द्र-बाबू पर गई। उनकी नजर राजाजी पर गई। मौलाना आजाद पर गई। उनकी नजर आचार्य कृपलानी पर

गई। विनोबा पर गई।

वे सोचने लगे पहिला सत्याग्रही किसे बनाया जाय? आदर्श सत्याग्रही किसे चुना जाय? किसका काम सबसे बड़ा है? किसके गुण सबसे ज्यादा हैं? किसकी तपस्या सबसे अधिक है? आखिर उनकी दृष्टि विनोबा पर ही रुकी। आखिर उनका ध्यान विनोबा पर ही गया। उन्होंने विनोबा को ही चुना।

उन्होंने विनोबा को बुलाया और स्वीकृति मांगी। विनोबा तैयार हो गये। उन्होंने घोषणा की कि विनोबा सबसे पहिले सत्याग्रह करेंगे। वे सबसे पहिले (सन् १६४० के १७ अक्टूबर को) सत्याग्रह की लड़ाई छेड़ेंगे। वे सबसे पहिले पवनार में युद्ध विरोधी भाषण देंगे। वे सबसे पहिले जेल जायेंगे।

विनोबा का नाम अखबारों में देखकर लोग चकित रह गये। विनोबा का नाम गांधीजी की जबान पर देखकर लोग चकित रह गये। विनोबा का नाम नेताओं की जबान पर देख कर लोग चकित रह गये। विनोबा ने ठीक समय पर पवनार में भाषण दिया। लेकिन सरकार ने उन्हें गिरफ्तार नहीं किया। उन्होंने फिर दूसरे दिन भाषण दिया। फिर भी सरकार ने उन्हें गिरफ्तार नहीं किया। उन्होंने फिर भाषण दिया।

आखिर उन्हें गिरफ्तार करना पड़ा। आखिर उन्हें सजा देनी पड़ी। फिर तो जवाहरलालजी ने सत्याग्रह किया। दूसरे लोगों ने सत्याग्रह किया और सत्याग्रह प्रारंभ होगया।

तीन महीने बाद वे छूटे। छूटते ही उन्होंने फिर सत्याग्रह किया। उन्हें फिर जेल भेज दिया गया। फिर सजा दी गई। लेकिन जेल से छूटते ही उन्होंने फिर सत्याग्रह किया। फिर उन्हें जेल भेज दिया गया। इस तरह वे तीन बार जेल गये। तीन बार उन्होंने सत्याग्रह किया। उन्होंने गांधीजी के आदेशों का पूरी तरह पालन किया। उन्होंने कांग्रेस के आदेशों का पूरी तरह पालन किया। उन्होंने जेल के नियमों का पूरी तरह पालन किया। गांधीजी ने उनकी बड़ी प्रशंसा की। महादेवभाई ने उनकी बड़ी प्रशंसा की। दूसरे नेताओं ने उनकी बड़ी प्रशंसा की।

उधर लड़ाई चल रही थी। वह और भयंकर बनती जा रही थी। जापान बढ़ता आ रहा था। वह देशों को जीतता आ रहा था। अतः सरकार घबराई और उसने सर क्रिप्स को भारत भेजा। उसने सर क्रिप्स के साथ कुछ प्रस्ताव भेजे। लेकिन देश ने उनको मन्जूर नहीं किया। कांग्रेस ने उन्हें स्वीकार नहीं किया। क्योंकि वे सुधार अधूरे थे। वे अधिकार थोथे थे। वे वायदे सारहीन थे।

अतः सरकार से लड़ना जरूरी हो गया। सरकार का विरोध करना जरूरी हो गया। कांग्रेस ने 'भारत छोड़ो' का नारा लगाया। लोगों ने 'भारत छोड़ो' की आवाज बुलन्द की। गांधीजी ने 'करो या मरो' का मन्त्र दिया। सारा देश लड़ाई में कूद पड़ा। सारा देश सरकार से लड़ने लगा। सारा देश सरकारी कानून तोड़ने लगा। सारा देश विद्रोह करने लगा।

इधर विनोबा अपने काम में लगे रहे। उन्होंने सत्याग्रह करने की तैयारी नहीं की। उन्होंने जेल जाने का विचार नहीं किया। लेकिन सरकार उन्हें कैसे छोड़ देती। सरकार उन्हें कैसे काम करने देती। उसने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। उसने उनका आश्रम जब्त कर लिया। उसने उन्हें वेलोर जेल भेज दिया। उसने पता नहीं लगने दिया कि विनोबा कहां हैं।

सरकार ने उन्हें एक वर्ष तक मद्रास प्रान्त की जेलों में रखा। फिर उन्हें मध्य प्रान्त की सिवनी जेल भेज दिया। अपनी नजरबन्दी के दिनों वे कताई करते रहे और अध्ययन भी। अपनी नजरबन्दी के दिनों वे राष्ट्र भाषा सिखाते रहते।

अन्त में सन् १९४४ में बड़े-बड़े नेता छोड़े गए। विनोबाजी भी छोड़ दिये गये।

: ११ :

शान्ति यात्रा

भारत-छोड़ो आन्दोलन का बड़ा असर हुआ। उससे जनता में बड़ी जाग्रति हुई। उससे सरकार में बड़ी हल-चल मची। इंग्लेण्ड से पार्लियामेन्ट के सदस्यों का एक प्रतिनिधि-मण्डल आया। उसने सारे देश की यात्रा की। उसने सब नेताओं और राजनीतिज्ञों से भेंट की। लौट कर उसने एक रिपोर्ट दी। रिपोर्ट में कहा कि भारत को आजादी दी जानी चाहिए।

अब इंग्लेण्ड की सरकार ने एक मन्त्रीमण्डल मिशन भेजा। इसमें तीन सदस्य थे। ये लोग भी सब नेताओं से मिले। ये लोग भी सब अधिकारियों से मिले। इन्होंने अपनी योजना देशके सामने रखी। बहुत दिनों तक चर्चा होती रही। बहुत दिनों तक विचार होता रहा। मुस्लिम-लीग पाकिस्तान की मांग पर अड़ी रही। वह मुसलमानों का अलग राज चाहती थी। अतः उसने बंगाल में सीधी कार्रवाई दिवस मनाया। उस दिन उसने जुलूस निकाला। हिन्दुओं के विरुद्ध मुसलमानों को भड़काया। नतीजा यह निकला कि दंगा होगया। बहुत से हिन्दू मारे गये और थोड़े से मुसलमान भी मारे गये। मुस्लिम-

लीग बड़ी खुश हुई। मुसलमान बड़े उत्साहित हुए। उन्होंने बंगाल के गांवों में मारकाट शुरू करदी। कई हिन्दू मार डाले गये। कई हिन्दू भगा दिये गये। कई घर लूट लिए गये। कई स्त्रियां अपमानित की गई।

जब गांधीजी ने यह सब सुना तो वे बेचैन होगये। वे नोआखाली आगए। वे पैदल ही गांवों में निकले। वे अकेले ही गांवों में घूमे। वे लोगों से कहने लगे—आपस में प्रेम से रहो। आपस में शान्ति से रहो। धर्म लड़ाई नहीं, प्रेम सिखाता है। धर्म हिंसा नहीं, अहिंसा सिखाता है। धर्म निर्दयता नहीं, दया सिखाता है। उन्होंने हिन्दुओं को ढाढ़स बंधाया। उन्होंने मुसलमानों में दया जगाई। उन्होंने मुसलमानों में प्रेम जगाया।

इधर विनोबा परंधाम में थे। उनके पास भी सब बातें पहुँची। उनके पास भी सब खबरें गई। उनसे भी लोगों ने नोआखाली जाने को कहा। उनसे भी शान्ति स्थापना का काम करने को कहा। उन्होंने जवाब दिया—मेरे लिए यहीं का काम बड़ा है। वे नोआखाली नहीं गये। इसका यह अर्थ नहीं कि विनोबा हृदयहीन हैं। इसका यह अर्थ नहीं कि वे दूर की घटनाओं के प्रति उदासीन हैं। विनोबा अपने सामने के काम को ही सबसे ज्यादा महत्व देते हैं। वे उसीमें जुटे रहते हैं। वे बिना गांधीजी के आदेश

के बाहर नहीं जाते थे।

इधर गांधीजी ने कलकत्ता में उपवास किया। उसके बाद दिल्ली में भी उपवास किया। दोनों जगह उन्होंने प्राणों की बाजी लगादी। दोनों जगह उन्होंने हलचल मचा दी। दोनों जगह उन्होंने शान्ति स्थापित करदी। लेकिन एक दिन प्रार्थना में एक धर्मान्ध व्यक्ति ने उनपर गोली चला दी। उस पागल व्यक्ति ने उनके प्राण ले लिए।

शान्ति का काम अधूरा रह गया। सद्भावना बढ़ाने का काम अधूरा रह गया। अतः सबकी आंखें विनोबाजी पर जा लगी। सबकी नजरें विनोबाजी पर पड़ी। वर्धा में गांधीजी के अनुयायियों का सम्मेलन हुआ। सम्मेलन में सबने उनसे गांधीजी का काम जारी रखने को कहा। सबने उनसे शान्ति स्थापित करने के लिए कहा।

वे परंधाम से दिल्ली आये। दिल्ली में उन्होंने शरणार्थियों की सेवा का काम लिया। उन्होंने शरणार्थी केम्पों का दौरा किया और जगह-जगह भाषण दिये। उन्होंने शरणार्थियों को ढाढ़स बंधाया और उन्हें प्रेम का रास्ता दिखाया। उन्होंने शरणार्थियों को शान्ति और स्वावलम्बन का रास्ता दिखाया। उन्होंने सरकार का बोझ भी हल्का किया।

हिन्दू शरणार्थियों का प्रश्न हल होने लगा। लेकिन मेवों की समस्या नहीं सुलझी। मेव हिन्दू थे। बाद में वे मुसलमान हो गये। वे भरतपुर के आसपास रहते थे। यहां वे खेती करते थे। हिन्दू मुसलमानों के झगड़े में वे पाकिस्तान चले गये। वे भी साम्प्रदायिकता के शिकार बन गये। लेकिन पाकिस्तान सरकार ने उनको जगह नहीं दी। उसने उनको लौटा दिया।

उनके सामने फिर से बसने का सवाल था। अपनी जमीन लेने का सवाल था। हिन्दू शरणार्थियों के साथ सबकी सहानुभूति थी। लेकिन मेव शरणार्थियों के साथ कम लोगों की सहानुभूति थी। मेव शरणार्थियों में कम लोगों की दिलचस्पी थी।

विनोबाजी ने मेवों का सवाल ले लिया। उन्होंने मेवों के कैम्पों का दौरा किया। उनके प्रतिनिधियों से बातें की। उनकी सभाओं में भाषण दिये। उन्होंने सरकारी अधिकारियों से बातें की। बहुत प्रयत्न के बाद मेवों को उनकी जमीन लौटा दी गई। उनको फिर से बसा दिया गया।

इन्हीं दिनों बीकानेर में गांधी-सप्ताह मनाया गया। कुछ लोग हरिजनों के मुहल्ले में गये। वहां उन्होंने सफाई की। वहां उन्होंने और भी काम किया। लेकिन

शामको जब वे लोग मन्दिर में गये तो उन्हें नहीं आने दिया गया। उनका मन्दिर प्रवेश बन्द कर दिया गया। कार्यकर्त्ताओं को इससे दुःख हुआ। उन्होंने मन्दिर के दरवाजे पर ही बैठे रहने का निश्चय किया। उन्होंने वहीं सत्याग्रह करने का निश्चय किया।

विनोबाजी को यह खबर मिली। वे बीकानेर गये। उन्होंने कार्यकर्ताओं को समझाया। सवर्णों को समझाया। पुजारियों को समझाया। उन्होंने सत्याग्रहियों से कहा वे हरिजनों को छोड़कर मन्दिर में जाने का प्रयत्न क्यों करते हैं? वे हरिजनों को छोड़कर धार्मिक बनने का विचार क्यों करते हैं? अतः जबतक हरिजन मन्दिर में न जायं वे भी मन्दिर में न जायं। विनोबा के प्रवचनों का बड़ा असर हुआ। वहां शान्ति स्थापित हो गई।

इसके बाद विनोबाजी अजमेर गये। वहां उर्स का मेला लग रहा था। दूर-दूर से बहुत से मुसलमान आये थे। झगड़ा होने का डर था। विनोबाजी अजमेर सात दिन रहे। उन्होंने हिन्दुओं की सभा में भाषण दिये। उन्होंने मुसलमानों की सभा में भाषण दिये।

एक दिन वे दर्गा शरीफ गये। दर्गा शरीफ मुसलमानों का बहुत बड़ा पवित्र स्थान है। विनोबाजी ने

यहां प्रार्थना की। विनोबाजी ने यहां राम धुन गाई। विनोबाजी ने यहां प्रवचन दिया। सब लोग गद्गद् होगये। सब लोग आनन्द मग्न हो गये। सब लोग हिन्दू-मुसलमान का भेद भूल गये। दर्गा के दीवान ने उनको सीरोपाव भेंट किया। उसने उनका बहुत सम्मान किया। बड़ा ही सुन्दर दृश्य था। बड़ा ही मार्मिक दृश्य था। सब आनन्द में डूब गये। सब लड़ाई झगड़े की बात भूल गये।

अजमेर के बाद वे हैदराबाद गये। हैदराबाद में रजाकारों का उपद्रव बढ़ रहा था। वहां अशान्ति फैल रही थी। वहां हिंसा और विद्वेष की लहर फैल रही थी। विनोबाजी गांव-गांव में गये। वे शहर-शहर में गये। उन्होंने सब जगह प्रेम और उदारता का सन्देश दिया। परिणाम अच्छा हुआ। सब जगह शान्ति होने लगी। सब जगह कटुता मिटने लगी।

: १२ :

सर्वोदय यात्रा

हैदराबाद की यात्रा के बाद विनोबाजी परंधाम आ गये। यहां उनके पेट में कुछ तकलीफ शुरु हुई।

डाक्टरों ने कहा आंतों में फोड़ा होगया है। आपरेशन करना पड़ेगा। वह बड़ा खतरनाक है। आपरेशन के अलावा कोई दूसरा इलाज नहीं है। लोगों ने कहा आपरेशन करवा लेना चाहिए। साथियों ने कहा आप-रेशन करवा लेना चाहिए। लेकिन विनोवा ने कहा मैं आपरेशन नहीं कराऊंगा। मैं डाक्टरी इलाज नहीं करवाऊंगा। मैं तो राम-नाम के द्वारा ही अपना इलाज करुंगा। सब लोग चिन्तित होगये। सब लोग परेशान हो गये। विनोवा ने अपना भोजन वदल दिया। उन्होंने अपनी दिनचर्या वदल दी। वे राम-नाम के द्वारा ही अपना इलाज करने लगे। कुछ दिन के वाद तकलीफ कम होने लगी। डाक्टर चकित रह गये। साथी दंग रह गये। राम-नाम में विनोवा की अपार श्रद्धा है। ईश्वर में विनोवा का अटल विश्वास है।

इन दिनों परंधाम आश्रम में वे यह सोचते रहे कि देश के किसान और मजदूर कैसे सुखी हो सकते हैं। देश की गरीबी कैसे मिट सकती है। देश की अशिक्षा कैसे मिट सकती है। देश में रामराज्य कैसे स्थापित हो सकता है।

वे इस नतीजे पर पहुँचे कि यह तभी होगा जब सब लोग शरीरश्रम करेंगे और स्वावलम्बी वनेंगे। यह

तभी होगा जब सब लोग अपना अनाज पैदा कर लेंगे और अपना कपड़ा बना लेंगे। यह तभी होगा जब सब लोग पैसे के बन्धन से मुक्त हो जाएंगे। क्योंकि आज सब जगह पैसे का राज है। पैसे वाले बिना मेहनत किये मौज से रहते हैं। पैसे वाले बिना उत्पादन किये मौज से रहते हैं। पैसे वाले गरीबों का शोषण करते हैं।

इस विचार के आते ही वे स्वावलम्बी होने के काम में लग गये। उन्होंने निश्चय किया कि हम बाहर से पैसा नहीं लेंगे। बाहर से अनाज नहीं खरीदेंगे। बाहर से कपड़ा नहीं लेंगे। हम अपना अनाज और कपड़ा यहीं पैदा करेंगे। हम अपनी आवश्यकता की सब चीजें यहीं तैयार करेंगे। इसका नाम उन्होंने साम्ययोग रखा। इसका नाम उन्होंने कांचनमुक्तियोग रखा। बस वे इसी काम में जुट गये। वे दिन भर खेतों में काम करने लगे। वे दिन भर शरीरश्रम करने लगे। कड़ा से कड़ा शरीरश्रम करके उन्होंने लोगों को चकित कर दिया। ज्यादा से ज्यादा उत्पादन बढ़ा कर उन्होंने लोगों को चकित कर दिया।

इन्हीं दिनों शिवरामपल्ली हैदराबाद में सर्वोदय सम्मेलन होना निश्चित हुआ। लोगों ने उनसे सम्मेलन में जाने के लिए कहा। लोगों ने उनसे सम्मेलन

को प्रेरणा देने का आग्रह किया। लेकिन वे तो साम्ययोग में लगे थे। वे तो वाहनों के द्वारा यात्रा करना छोड़ चुके थे। क्योंकि वाहनों की यात्रा में विचार-शोधन नहीं होता। वाहनों की यात्रा में जनता जनार्दन का दर्शन नहीं होता। वाहनों की यात्रा में उस प्रदेश का पूरा ज्ञान नहीं होता। लेकिन जब लोगों ने ज्यादा आग्रह किया तो उन्होंने पैदल यात्रा का निश्चय कर लिया।

इतनी दूर तक की यात्रा पैदल करना एक अनोखा निश्चय था। सारे देश में हलचल मच गई। सारे देश की आंखें उनपर लग गई। लेकिन सन्त लोग तो पैदल ही यात्रा करते रहे हैं। कबीर और चैतन्य ने पैदल यात्रा की थी। बुद्ध और महावीर ने पैदल यात्रा की थी। शंकराचार्य और नामदेव ने पैदल यात्रा की थी। गांधीजी ने भी नोआखाली की पैदल यात्रा की थी। विनोबा भी पैदल ही यात्रा के लिए निकल पड़े।

मार्च का महीना था। गर्मी शुरु हो रही थी। वे अपने साथियों के साथ आश्रम से विदा हुए। वे प्रतिदिन सवा तीन बजे उठते और पौने चार बजे प्रार्थना करते। वे चार बजे यात्रा के लिए चल देते। उन्होंने प्रतिदिन चार घंटे चलने का नियम बनाया। आठ नौ बजे

किसी गांव में पहुँच जाते। वहां ग्रामवासी उनका स्वागत करते और उन्हें अपना दुख-दर्द सुनाते। वहां ग्रामवासी उनके साथ सामूहिक कताई और प्रार्थना में भाग लेते। विनोबा के प्रवचनों का लोगों पर बड़ा असर होता। विनोबा की तपस्या का लोगों पर बड़ा असर होता।

जिस गांव में वे जाते उत्साह की लहर दौड़ जाती। ग्राम को सजाया जाता। आसपास के लोग इकट्ठे हो जाते। सब उनके दर्शन करके प्रवचन सुनते। सब उनसे प्रेरणा लेते। इस तरह यात्रा करते-करते वे ठीक समय पर शिवरामपल्ली पहुँचे। वहां वे सर्वोदय सम्मेलन में सम्मिलित हुए।

सर्वोदय सम्मेलन के बाद विनोबाजी तेलंगाना की यात्रा के लिए चले। उन्होंने सुना था कि तेलंगाना के लोग बड़े दुखी हैं। वहां साम्यवादियों ने बहुत उपद्रव किये हैं। वहां साम्यवादियों ने बहुत मार-पीट की है। वहां साम्यवादियों ने लोगों को बहुत सताया है।

तेलंगाना के एक ग्राम में कुछ हरिजन उनके पास आये। वे बोले—हमें कुछ जमीन दिलवा दीजिये। उसमें हम खेती करेंगे और शान्ति से रहेंगे। क्योंकि हमारे पास कोई काम धन्धा नहीं है। हमारे पास निर्वाह का कोई साधन नहीं है। विनोबाजी को उनकी

बात ठीक लगी। उन्होंने प्रार्थना सभा में लोगों से कहा—ईश्वर ने पानी सब लोगों को समान रूप से दिया है। ईश्वर ने हवा सब लोगों को समान रूप से दी है। ईश्वर ने प्रकाश सब लोगों को समान रूप से दिया है। इन पर किसी एक आदमी का ज्यादा कम अधिकार नहीं है। इनपर किसी एक जाति का ज्यादा कम अधिकार नहीं है। अतः जमीन भी ईश्वर ने सबके लिए बनाई है। वह भी सबको समान रूप से मिलनी चाहिए। जमीन माँ है। उससे किसी को वंचित मत रहने दो। जमीन मां है उससे किसीको बिछड़ने मत दो। अगर माँ से बेटों को अलग करोगे तो भेद-भाव बढ़ेगा। उससे उत्पादन घटेगा और बेकारी बढ़ेगी। उससे अशान्ति फैलेगी और ईश्वर अप्रसन्न होगा।

विनोबा ने कहा—अगर आप खुशी-खुशी जमीन देंगे तो लोगों में सद्भावना बढ़ेगी और समाज में शान्ति होगी। लेकिन आप खुशी-खुशी जमीन नहीं देंगे तो खूनी क्रान्ति होगी और लोग जबरदस्ती जमीन छीन लेंगे। अतः मुझे गरीब भाईयों के लिए जमीन दीजिये। गरीबों को अपने परिवार का पांचवां भाई ही मानिये। उसको अपना भाग दे दीजिये। उनको अपना अधिकार दे दीजिये।

उनकी बात लोगों को अच्छी लगी। उनकी बात लोगों को सच्ची लगी। कुछ लोगों ने खुशी-खुशी अपनी कुछ जमीन दे दी। कुछ लोगों ने खुशी-खुशी अपनी सब जमीन दे दी। अब तो वे हर गांव में यही बात कहने लगे। अब तो वे हर गांव में भूमिदान लेने लगे। उन्होंने दान में मिली हुई जमीन गरीबों को दे दी। उन्होंने दान में मिली हुई जमीन बेकार लोगों को दे दी।

तेलंगाना की यात्रा में उन्हें १४००० एकड़ जमीन मिली। सारा देश चकित रह गया। जवाहरलालजी ने उनकी बड़ी प्रशंसा की। राजेन्द्र बाबू ने उनकी बड़ी प्रशंसा की। क्योंकि नेहरुजी प्रधान मंत्री बनकर भी जो न कर सके थे वह विनोबाजी ने कर दिखाया। राजेन्द्र-बाबू राष्ट्रपति बनकर भी जो न कर सके थे वह विनोबाजी ने कर दिखाया।

: १३ :

भूदान-यज्ञ

विनोबाजी ऐसा तरीका ढूँढ रहे थे जिसमें अहिंसा की शक्ति पूरी तरह प्रकट हो सके। वे ऐसा तरीका ढूँढ रहे थे जिसमें अहिंसात्मक क्रान्ति का क्रियात्मक प्रारंभ हो

सके। वे ऐसा तरीका ढूँढ़ रहे थे जिससे सर्वोदय का मार्ग प्रशस्त हो सके। तेलंगाना की यात्रा में विनोबाजी को यह चीज मिल गई। वे कहते हैं कि तेलंगाना की यात्रा में मेरे हाथ में एक रत्न चिंतामणि आगई। लेकिन तेलंगाना में जो भूमि दान में मिली उसके पीछे वहाँ की एक पृष्ठ-भूमि थी। तेलंगाना साम्यवादियों के जुल्म से परेशान था। वहां लोगों की जमीन जबरदस्ती छीनी जा रही थी। वहां लोगों की सम्पति मारपीट करके ली जारही थी। अतः यह शंका थी कि संभव है दूसरे प्रान्तों में भूमि दान न मिले। हो सकता है दूसरे प्रान्तों में इस तरीके से अहिंसा की शक्ति प्रकट न हो। अतः उस तरीके को दूसरे प्रान्तों में आजमाने की बात विनोबा के दिमाग में घूम रही थी।

तेलंगाना से लौटकर वे कुछ दिन परंधाम आश्रम में रहे। इस बीच विनोबा ने योजना कमीशन के एक सदस्य से बातचीत की। यह कमीशन एक पंचवर्षीय योजना बना रहा था यह योजना सारे देश को सुखी और समृद्ध बनाने की दृष्टि से बनाई गई थी। विनोबा को इसमें बहुत सी भूलें दिखाई दी। उन्होंने उसकी कड़ी आलोचना की। उन्होंने उसकी कमियां साफ-साफ कह दी। नेहरुजी पर उनकी बातों का बड़ा असर हुआ। उन्होंने विनोबा को

दिल्ली बुलाया। उन्होंने कहा कि वे यहां आकर कमीशन के सामने अपने विचार रखें।

विनोबा को अपनी शंका निवारण का मौका मिल गया। उन्हें अपने प्रयोग को अन्य प्रान्तों में भी आजमाने का अवसर मिल गया। अपने साथियों के साथ वे पैदल ही चल पड़े। पहिले वे मध्यप्रदेश में से गुजरे, फिर मध्य-भारत और राजस्थान में से। वे विन्ध्य प्रदेश और उत्तर-प्रदेश में से भी गुजरे। हर गांव में विनोबाजी का वैसा ही स्वागत हुआ। हर जगह विनोबाजी का कार्यक्रम वैसा ही रहा। हर जगह विनोबाजी को काफी जमीन मिली। उन्होंने बड़े-बड़े जमींदारों से जमीन मांगी और छोटे-छोटे किसानों से भी। लेकिन छोटे किसानों ने जगह-जगह बहुत त्याग और उदारता का परिचय दिया। इन छोटे-छोटे किसानों ने बड़े प्रेम और श्रद्धा से जमीन दी। विनोबाजी के यज्ञ में कई शबरियों ने अपने बेर दिये, कई सुदामाओं ने अपने तंदुल समर्पित किये। जगह-जगह बड़े मार्मिक दृश्य दिखाई दिये। अनेक दरिद्रों को आत्मोद्धार की प्रेरणा मिली और अनेक धनिकों को स्वामित्य-निरसन की।

विनोबाजी को सब तरह के लोगों ने जमीन दी। हिन्दुओं और मुसलमानों ने अपनी जमीन दी। ईसाइयों और

पारसियों ने अपनी जमीनें दी। हरिजन तो वेचारे सर्वहारा हैं लेकिन उन्होंने भी जमीन दी। स्त्रियों का तो अधिकार ही नहीं माना जाता लेकिन उन्होंने भी जमीन दी। समाजवादियों ने इस यज्ञ में हिस्सा लिया और किसान मजदूर प्रजापार्टी ने भी। कांग्रेस ने इस महायज्ञ में हिस्सा लिया और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने भी।

देहली पहुँचने में उन्हें २ महीने लग गये। इस २ माह की यात्रा में उन्हें अठारह हजार एकड़ जमीन मिली। इस दो मास की यात्रा में उन्हें औसतन ३०० एकड़ जमीन प्रति दिन मिली। तेलंगाना में यह औसत २०० एकड़ थी। अब तो भूमिदान यज्ञ की सफलता में कोई शंका नहीं रही। अब तो उसका भविष्य उज्वल दिखाई देने लग गया।

१३ नवम्बर के दिन विनोबाजी दिल्ली पहुँचे। सारे शहर में उनका स्वागत हुआ। वे राजघाट पहुँचे। वहीं कुटिया में ठहरे। राष्ट्रपति राजेन्द्रबाबू उनसे मिलने आये। उन्होंने अपनी जमीन विनोबाजी को अर्पण की। दूसरे भी बहुतसे लोग आये और उन्होंने भी अपनी जमीन अर्पण की। नेहरु जी और योजना कमीशन के सदस्य भी आये। विनोवा ने अपने विचार उनके सामने साफ-साफ शब्दों में रख दिये। सबने आदर पूर्वक उनके विचार सुने। सबने उनके सुझावों पर ध्यान दिया। सबने योजना में यथा-

संभव परिवर्तन करने का आश्वासन दिया।

विनोबाजी दिल्ली में ११ दिन रहे। ग्यारहों दिन वे बड़े व्यस्त रहे। प्रति दिन प्रातः काल चार बजे प्रार्थना होती और कार्यक्रम प्रारंभ होजाता। बहुत से लोग मिलने आते। बहुत से प्रश्न सामने आते। बहुत सी सभाओं में भाषण देने पड़ते। लेकिन विनोबाजी बिना थके काम करते रहते। वे सभी प्रश्नों का हल बताते। वे सभी समस्याओं को सुलझाते। विनोबाजी की उपस्थिति से कई लोगों को प्रेरणा मिली। कुछ डाकुओं ने उनके सामने डाके न डालने की प्रतिज्ञा की। कुछ लुटेरों ने लूटमार न करने का वचन दिया। अहिंसा की शक्ति अधिकाधिक प्रकट होने लगी।

भूमिदान यज्ञ की सफलता देखकर उत्तर प्रदेश के कार्यकर्त्ता बड़े प्रभावित हुए। उन्होंने विनोबा से प्रार्थना की कि वे उत्तर प्रदेश की यात्रा प्रारंभ करें। विनोबाजी उत्तर प्रदेश की ओर चल पड़े। इन दिनों देश में चुनाव की हल चल जोर शोर से शुरु होगई थी। सारे दल सत्ता प्राप्त करने में लगे थे। सारे आदमी चुनावों में लगे हुए थे। फिर भी विनोबा का स्वागत हर जगह हुआ। हर जगह विनोबा को भूमि मिली। हर जगह इस काम में ईश्वर का हाथ दिखाई दिया।

विनोबा कहते हैं मैं जमीन की भिक्षा मांगने नहीं आया

हूँ वे कहते हैं मैं दया की भीख मांगने नहीं आया हूँ। मैं तो अधिकार मांगने आया हूँ। मैं तो दीक्षा देने आया हूँ। मैं किसी मठ या मन्दिर के लिए जगह नहीं मांगता। मैं किसी मस्जिद या गिरजाघर के लिए जगह नहीं मांगता। मैं तो दरिद्रनारायण के लिए जमीन मांगता हूँ। मैं तो एक विचार फैला रहा हूँ, एक नई क्रान्ति लारहा हूँ। मैं तो गांधीजी के बताये हुए रास्ते से समस्या का हल बता रहा हूँ।

वे कहते हैं—भूमिदान यज्ञ में दान शब्द आता है। 'दान' का अर्थ है सम्यक विभाजन। जिसे जमीन दी जायगी वह मुफ्त में उसका उपयोग नहीं करेगा। उसे जमीन में श्रम करना पड़ेगा। जमीन में अपना पसीना मिलाना पड़ेगा। तब जमीन में चीजों का उत्पादन होगा। तब वह चीजों का उपयोग करेगा। अतः उसे दीन मानना भूल है। उसे दया का पात्र मानना गलती है। उसके उत्पादन का उपभोग तो उसका अधिकार है। भूमिदान के द्वारा मैं उसे यही अधिकार दिला रहा हूँ।

विनोबा कहते हैं—भूदान यज्ञ मजदूर आन्दोलन है। यह सबसे अधिक कमजोर और सबसे अधिक मूक लोगों का आन्दोलन है। मजदूरों के आन्दोलन तो यूरोप में हुए हैं क्योंकि वहां बड़े-बड़े कारखाने हैं। वहां उनके बड़े बड़े संगठन हैं। लेकिन भारत तो किसानों का देश है। भारत के

किसान असंगठित और अशिक्षित हैं। वे बेरोजगार और बेजमीन हैं। वे समाज में सबसे नीचे के तबके के हैं। इसीलिए मैंने उनका सवाल उठाया है। ऐसे लोगों का सवाल उठाना ही अहिंसा और सर्वोदय का तरीका है। क्योंकि यदि ये लोग ऊपर उठ जाते हैं तो सब ऊपर उठ जाते हैं।

विनोबा कहते हैं —मैं भीख नहीं मांग रहा हूँ। मैं तो गरीबों की सेवा की दीक्षा दे रहा हूँ। मैं तो चारों तरफ एक हवा फैलाना चाहता हूँ। मैं तो सब में सद्भावना पैदा करना चाहता हूँ। मैं जानता हूँ कि आज कल चारों ओर रिश्वतखोरी हो रही है। चारों ओर काला बाजार हो रहा है कितना ही फूंक कर चलने पर भी पाप हो जाता है। लेकिन यह तो बुरी समाज रचना का परिणाम है। वास्तव में तो आम जनता का दिल बड़ा शुद्ध है। मैं उस शुद्धता का साक्षी हूं। मेरे साथ रोज ऐसी घटनाएँ घटती हैं। मुझे रोज बड़े बड़े पवित्र दान मिल रहे हैं। कोई भाई रातों रात चलकर आता है और अपनी सब जमीन दे जाता है। कोई बहिन बहुत दूर से आकर अपनी सब जमीन दे जाती है। रोज ऐसी दो चार घटनाएँ होती हैं। इतनी शुद्धि का अनुभव मुझे एकांत साधना में नहीं हुआ। ऐसी पवित्र अनुभुति पहिले मुझे नहीं हुई। ऐसा

लगता है मानों ईश्वर अनन्त हाथों से मेरे हृदय को धो रहा है।

विनोबा कहते हैं मैं विनय पूर्वक भूमि मांगता हूँ। मैं अपनी बात पूरी तरह समझाकर भूमि मांगता हूँ। यदि कोई भूमि नहीं देता तो मैं दुखी नहीं होता। उससे मुझे निराशा नहीं होती। मैं तो विचार का बीज बोता हूं। वह बीज आज नहीं तो कल जरुर उगेगा।

विनोबा कहते हैं—मैं प्रेम पूर्वक भूमि मांगता हूं। मैं अपनी बात समझाकर भूमि मांगता हूँ। यदि कोई मेरा विचार समझता है तो मुझे आनन्द होता है क्योंकि उससे चारों ओर सद्भावना फैलेगी। उससे चारों ओर प्रेम और त्याग का वातावरण बनेगा।

विनोबा कहते हैं—मैं वस्तु स्थिति समझाकर भूमि मांगता हूँ। जो बिना समझे भूमि देते हैं वे अच्छा नहीं करते। जो किसी दबाव से भूमि देते हैं वे भी अच्छा नहीं करते। उससे मुझे दुःख होता है। मुझे जैसे तैसे जमीन बटोरना नहीं है। मुझे तो साम्ययोग की वृति का निर्माण करना है। मुझे तो सर्वोदय की वृति का निर्माण करना है।

इस प्रकार पैदल यात्रा करते-करते वे बनारस पहुँचे। अब तक लगभग एक लाख एकड़ जमीन मिल चुकी थी। यहां पास ही सेवापुरी आश्रम में सर्वोदय सम्मेलन बुलाया

गया था। सन् १९५२ के मार्च का महीना था। सारे देश के बहुत से कार्यकर्त्ता आये। बहुत से नेता आये। सबमें उत्साह था। तीन दिन तक भूमिदान यज्ञ के ऊपर चर्चा हुई। सबने मिलकर तय किया कि अगले दो वर्षों में २५ लाख एकड़ भूमि प्राप्त की जाय।

अब तो भूमिदान यज्ञ एक बड़ा आन्दोलन बन गया। प्रांत-प्रांत का कोटा तैयार होगया। प्रांत-प्रांत के कार्यकर्त्ता निश्चित होगये। प्रान्त-प्रान्त में आन्दोलन प्रारंभ होगया। गोपबन्धु ने उड़ीसा की पैदल यात्रा प्रारंभ की। शंकरराव देव ने महाराष्ट्र में पैदल यात्रा प्रारम्भ की। दूसरे और लोगोंने भी अपने-अपने प्रान्तों में पैदल यात्रा प्रारंभ की। चारों ओर भूदान यज्ञ की हवा फैल गई। विनोबा का जादू आज सबके सिर पर चढकर बोल रहा है।

देश के नेता विनोबा की ओर आशा से देख रहे हैं। विदेश के नेता विनोबा को आश्चर्य से देख रहे हैं। विनोबा का यह आन्दोलन भारतीय संस्कृति के अनुकूल है। उसमें सामाजिक और आर्थिक क्रान्ति के बीज हैं। उसमें दुनिया में शान्ति स्थापित करने की क्षमता है। यद्यपि विनोबा एक भक्तिमार्गी सन्त हैं, वे एक परमार्थ साधक और विनम्र ग्राम सेवक हैं, तथापि उनका काम नेताओं के काम से भी बहुत बड़ा है। उनका काम शासकों के

काम से भी वहुत वड़ा है। उनका काम धनपतियों के काम भी वड़ा है। आइये हम उनका काम करें। आइये हम देश का काम करें।